License Information

Translation Questions (unfoldingWord) (Hindi) is based on: unfoldingWord® Translation Questions, unfoldingWord, 2022, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Translation Questions (unfoldingWord)

व्यवस्थाविवरण 1:1

जब मूसा ने इस्राएलियों से बात की, तब वह कहाँ था?

मूसा यरदन के पार जंगल में, यरदन की तराई के मैदान में था।

व्यवस्थाविवरण 1:3

जो कुछ यहोवा ने मूसा को इस्राएलियों से कहने की आज्ञा दी थी, उसके अनुसार मूसा उनसे ये बातें कब कहने लगा?

चालीसवें वर्ष के ग्यारहवें महीने के पहले दिन को।

व्यवस्थाविवरण 1:8

यहोवा ने किसको देश देने की शपथ खाई थी?

यहोवा ने अब्राहम, इसहाक, और याकूब से यह शपथ खाकर कहा था कि यह देश उनको और उनके बाद उनके वंशजों को देगा।

व्यवस्थाविवरण 1:9–10

मूसा को क्यों लगा कि वह अकेला लोगों का भार नहीं उठा सकता?

परमेश्वर यहोवा ने उनको यहाँ तक बढ़ाया है कि वे गिनती में आज आकाश के तारों के समान हो गए हो।

व्यवस्थाविवरण 1:12–13

लोगों के झंझट, और भार, और झगड़ों को सहने में मूसा की सहायता कौन करेगा?

वे एक-एक गोत्र में से एक-एक बुद्धिमान और समझदार और प्रसिद्ध पुरुष को चुन लेंगे और उन्हें अपना मुखिया ठहराएँगे।

व्यवस्थाविवरण 1:16

मूसा ने न्यायियों को क्या करने की आज्ञा दी?

उसने उन्हें आज्ञा दी कि वे अपने भाइयों के और उनके साथ रहने वाले परदेशियों के भी मुकद्दमे सुना करे।

व्यवस्थाविवरण 1:19

होरेब से पहाड़ी देश तक यात्रा करते समय इस्राएलियों को किन-किन मार्गों से होकर गुजरना पड़ा?

वे बड़े और भयानक जंगल से होकर चले।

व्यवस्थाविवरण 1:22

लोगों ने मूसा से उनके आगे पुरुषों को भेजने क्यों कहा?

उन्होंने मूसा से कहा कि उनके आगे पुरुषों को भेज दे, ताकि उस देश का पता लगाकर उनको यह सन्देश दें कि उन्हें कैसे आक्रमण करना चाहिए और नगरों के बारे में जानकारी दे सकें।

व्यवस्थाविवरण 1:23

पहाड़ी देश की जासूसी करने के लिए मूसा ने किन्हें चुना?

उसने बारह पुरुष अर्थात्, हर गोत्र में से एक पुरुष।

व्यवस्थाविवरण 1:25

उन पुरुषों ने देश के बारे में क्या विवरण प्रस्तुत किया?

उन्होंने कहा, "जो देश हमारा परमेश्वर यहोवा हमें देता है वह अच्छा है।"

व्यवस्थाविवरण 1:27

पुरुषों ने ऐसा क्यों कहा कि यहोवा उनको मिस्र देश से निकाल ले आया है?

उन्होंने कहा कि यहोवा उनसे बैर रखता है, इस कारण उनको मिस्र देश से निकाल ले आया है कि उनका सत्यानाश कर डाले।

व्यवस्थाविवरण 1:28

उनके भाइयों ने उस देश के लोगों के विषय में क्या कहा?

उन्होंने कहा कि उस देश के लोग इस्राएलियों से बड़े और लंबे थे।

व्यवस्थाविवरण 1:29–31

मूसा ने क्या कहा जिसके कारण लोगों को डरने की आवश्यकता नहीं थी?

उसने उनसे कहा कि वे न डरें, क्योंकि यहोवा उनके आगे-आगे चलता है, वह आप उनकी ओर से लड़ेगा, जैसे कि उसने मिस्र में और जंगल में किया।

व्यवस्थाविवरण 1:34–35

यहोवा ने कोप में आकर क्या शपथ खाई?

उसने शपथ खाई और कहा, "निश्चय इस बुरी पीढ़ी के मनुष्यों में से सिवाय कालेब के एक भी उस अच्छे देश को देखने न पाएगा"।

व्यवस्थाविवरण 1:38

यहोवा ने मूसा को नून के पुत्र यहोशू के लिए क्या करने को कहा?

यहोवा ने मूसा से कहा कि वह यहोशू को हियाव दे, क्योंकि उस देश को इस्राएलियों के अधिकार में वही कर देगा।

व्यवस्थाविवरण 1:39

यहोवा ने किसके बारे में कहा कि वे देश में जाएँगे और उसके अधिकारी होंगे?

उसने कहा कि उनके बच्चे अर्थात् जो अभी भले बुरे का भेद नहीं जानते, वे वहाँ प्रवेश करेंगे, और वे उसके अधिकारी होंगे।

व्यवस्थाविवरण 1:43–44

जब यहोवा ने लोगों से कहा कि पहाड़ी देश पर हमला न करें, तब लोगों ने क्या किया?

वे ढिठाई करके पहाड़ पर चढ़ गए, और एमोरियों ने उनका सामना करने को निकलकर मधुमक्खियों के समान उनका पीछा किया।

व्यवस्थाविवरण 2:1

मूसा ने उन्हें कहाँ से यात्रा करने को कहा?

वे लाल समुद्र के मार्ग के जंगल की ओर गए।

व्यवस्थाविवरण 2:4–5

यहोवा ने लोगों को किस बात से सावधान रहने की आज्ञा दी?

उन्हें एसावियों से लड़ाई नहीं छेड़नी थी, क्योंकि यहोवा उन्हें उनके देश में से पाँव रखने की जगह तक देगा अर्थात् कुछ भी नहीं देगा।

व्यवस्थाविवरण 2:6

उन्हें भोजन और पानी कैसे प्राप्त करना था?

उन्हें सेईर के लोगों से भोजन और पानी मोल लेना था ताकि वे खा-पी सकेंगे।

व्यवस्थाविवरण 2:9

यहोवा ने उन्हें मोआबियों से क्या न करने के लिए कहा?

उन्हें मोआबियों को न सताने और लड़ाई न छेड़ने के लिए कहा, क्योंकि यहोवा उन्हें वह देश नहीं दे रहा था।

व्यवस्थाविवरण 2:14

कादेशबर्ने को छोड़ने से लेकर जेरेद नदी पार होने तक इस्राएलियों को कितना समय लगा?

उन्हें कादेशबर्ने को छोड़ने से लेकर जेरेद नदी पार होने तक अड़तीस वर्ष बीत गए।

व्यवस्थाविवरण 2:16

सब योद्धा पुरुषों के साथ क्या हुआ?

सब योद्धा मरते-मरते लोगों के बीच में से नाश हो गए।

व्यवस्थाविवरण 2:19

यहोवा ने अम्मोनियों के देश को किसके अधिकार में कर दिया था?

यहोवा ने उसे लूत के वंशजों के अधिकार में कर दिया है।

व्यवस्थाविवरण 2:25

धरती पर रहने वाले लोग इस्राएलियों का समाचार पाकर क्या करेंगे?

वे इस्राएलियों के कारण डर के मारे काँपेंगे और पीड़ित होंगे।

व्यवस्थाविवरण 2:26–27

मूसा ने हेशबोन के राजा को क्या मेल की बातें कही?

मूसा ने कहा कि उसे राजपथ से होकर जाने दे, वह दाएँ और बाएँ हाथ न मुड़ेगा।

व्यवस्थाविवरण 2:28–29

मूसा ने लोगों के लिए भोजनवस्तु और पानी प्राप्त करने की क्या योजना बनाई?

उसने हेशबोन के राजा से कहा कि वह उसे भोजनवस्तु और पानी रुपया लेकर देवें ताकि वह खाएँ और पीएँ।

व्यवस्थाविवरण 2:32–33

जब सीहोन, मूसा का सामना करने आया, तब क्या हुआ?

यहोवा ने उसको मूसा के द्वारा हरा दिया, और उसको पुत्रों और सारी सेना समेत मार डाला।

व्यवस्थाविवरण 2:34

सभी बसे हुए नगरों का क्या हुआ?

मूसा ने राजा के सारे नगर ले लिए, और उनको स्त्रियों और बाल-बच्चों समेत यहाँ तक सत्यानाश किया कि कोई न छूटा।

व्यवस्थाविवरण 3:1

बाशान के राजा ओग ने इस्राएल के साथ क्या किया, जब वे उसके देश के पास पहुँचे?

बाशान के मार्ग में, बाशान का ओग नामक राजा अपनी सारी सेना समेत उनका सामना करने को निकल आया।

व्यवस्थाविवरण 3:3–4

इस्राएल ने बाशान के राजा और उसके लोगों के साथ क्या किया?

वे बाशान के राजा को यहाँ तक मारते रहे कि उनमें से कोई भी न बच पाया, और उसके सारे नगरों को ले लिया।

व्यवस्थाविवरण 3:7

इस्राएल ने घरेलु पशु और नगरों की लूट का क्या किया?

उन्होंने सब घरेलू पशु और नगरों की लूट अपनी कर ली।

व्यवस्थाविवरण 3:12–13

मूसा ने जिस देश पर अधिकार कर लिया था, वह किसे दिया?

उसने इसे रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र को दिया।

व्यवस्थाविवरण 3:18

मूसा ने रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र के योद्धाओं को क्या करने की आज्ञा दी?

उसने सब योद्धाओं को हथियार-बन्द होकर अपने भाई इस्राएलियों के आगे-आगे पार चलने की आज्ञा दी।

व्यवस्थाविवरण 3:20

यहोवा ने रूबेनियों, गादियों और आधे मनश्शे गोत्र से कब कहा कि वे अपने अधिकार की भूमि पर लौट सकते हैं?

जब यहोवा उनके भाइयों को विश्राम दे, और जब तक वे उस देश के अधिकारी न हो जाए।

व्यवस्थाविवरण 3:22

मूसा ने यहोशू से क्या नहीं करने के लिए कहा?

उसने यहोशू से कहा कि शत्रु से न डरना, क्योंकि जो उनकी ओर से लड़नेवाला है, वह यहोवा है।

व्यवस्थाविवरण 3:25

मूसा ने कहाँ जाने और देखने की विनती की?

उसने यहोवा से प्रार्थना की कि उसे पार जाने दे कि यरदन के पार उस उत्तम देश को और लबानोन को देखने पाएँ।

व्यवस्थाविवरण 3:26

यहोवा ने मूसा की देश देखने की प्रार्थना का उत्तर कैसे दिया?

यहोवा लोगों के कारण उससे रुष्ट हो गया और उसकी न सुनी।

व्यवस्थाविवरण 3:27

यहोवा ने मूसा को देश देखने की अनुमति कैसे दी?

यहोवा ने उसे पिसगा की चोटी पर चढ़ जाने और चारों ओर दृष्टि करके उसे देख लेने के लिए कहा क्योंकि वह यरदन के पार जाने न पाएगा।

व्यवस्थाविवरण 3:28–29

यहोवा ने मूसा से यहोशू के लिए क्या करने के लिए कहा?

उसने मूसा से कहा कि यहोशू को आज्ञा दे, और उसे ढाढ़स देकर दृढ़ कर; क्योंकि इन लोगों के आगे-आगे वही पार जाएगा, और जो देश तू देखेगा उसको वही उनका निज भाग करा देगा।

व्यवस्थाविवरण 4:1

इस्राएल के लोगों को क्या करना चाहिए ताकि वे जीवित रहें, और उस देश में जाकर उसके अधिकारी हो सकें, जो यहोवा उन्हें दे रहा है?

जो-जो विधि और नियम मूसा उन्हें सिखाना चाहता है, उन्हें सुनना है और उन पर चलना है, ताकि वे उस देश के अधिकारी हो जाए।

व्यवस्थाविवरण 4:2

लोगों को क्या नहीं करना चाहिए?

जो आज्ञाएँ मूसा उन्हें सुनाता है उसमें न तो कुछ बढ़ाना, और न कुछ घटाना है, ताकि वे यहोवा की आज्ञाओं का पालन कर सकें।

व्यवस्थाविवरण 4:4

यहोवा ने किन मनुष्यों का सत्यानाश किया?

जितने मनुष्य बालपोर के पीछे हो लिए थे उन सभी को यहोवा ने सत्यानाश कर डाला।

व्यवस्थाविवरण 4:6

इस्राएल को मूसा के द्वारा दिए गए विधि और नियम क्यों धारण करना चाहिए?

उनको धारण करने से लोगों के सामने उनकी बुद्धि और समझ प्रगट होगी।

व्यवस्थाविवरण 4:9–10

लोगों को अपने विषय में सचेत और अपने मन की चौकसी क्यों करनी चाहिए?

यह अत्यन्त आवश्यक है कि वे अपने विषय में सचेत रहे, और अपने मन की बड़ी चौकसी करें, कहीं ऐसा न हो कि जो-जो बातें उन्होंने अपनी आँखों से देखी उनको भूल जाएँ, और वह जीवन भर के लिए उनके मन से जाती रहें; किन्तु वे उन्हें अपने बेटों-पोतों को भी सिखाएँ।

व्यवस्थाविवरण 4:11–12

लोगों ने पहाड़ पर आग के बीच में से क्या सुना था?

यहोवा ने उस आग के बीच में से उनसे बातें की, अर्थात् उन्हें उसका शब्द सुनाई पड़ा, परंतु कोई रूप न देखा।

व्यवस्थाविवरण 4:13

वह वाचा क्या थी जिसे यहोवा ने उन्हें पूरा करने की आज्ञा दी और वह किस पर लिखी गई थी?

यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी कि वह उन्हें दस आज्ञाएँ सिखाए जो पत्थर की दो पट्टियों पर लिखी हुई थीं।

व्यवस्थाविवरण 4:15–18

लोगों को क्या न करने को कहा गया था?

उनसे कहा गया कि वे किसी भी रूप की कोई मूर्ति खोदकर स्वयं को बिगाड़ न दें, जिसमें पुरुष, स्त्री, पक्षी, रेंगने वाले जीव और मछली शामिल हैं।

व्यवस्थाविवरण 4:19

मूसा ने लोगों को सूर्य, चंद्रमा और तारों के प्रति सावधान रहने के लिए क्यों कहा?

उसने उन्हें बताया कि उन्हें सावधान रहना चाहिए कि वे आकाश, सूर्य, चंद्रमा या तारों की ओर बहककर उन्हें दण्डवत् करके उनकी सेवा न करने लगे।

व्यवस्थाविवरण 4:20

यहोवा ने लोगों को लोहे के भट्ठे सरीखे मिस्र देश से बाहर क्यों निकाला?

वह उन्हें मिस्र देश से निकाल ले आया ताकि वे उसका प्रजारूपी निज भाग ठहरे।

व्यवस्थाविवरण 4:21–22

यहोवा मूसा से क्रोधित था इसलिए उसने मूसा के साथ क्या किया?

वह मूसा को यरदन के पार उत्तम देश में प्रवेश नहीं करने देगा, और मूसा को देश के बाहर ही मरना होगा।

व्यवस्थाविवरण 4:24

यहोवा ने इस्राएल को कोई भी खुदी हुई मूर्ति बनाने से क्यों मना किया?

उनका परमेश्वर यहोवा भस्म करनेवाली आग है, वह जलन रखनेवाला परमेश्वर है।

व्यवस्थाविवरण 4:26

अगर लोग बिगड़ जाएं और यहोवा की दृष्टि में बुराई करें तो मूसा ने उनके साथ क्या होने के लिए कहा?

वे यरदन पार के देश से जल्दी बिल्कुल नाश हो जाएँगे और पूरी रीति से नष्ट हो जाएंगे।

व्यवस्थाविवरण 4:27–28

मूसा ने यहोवा द्वारा लोगों के साथ क्या करने के लिए कहा है?

यहोवा लोगों को तितर-बितर करेगा और वे जातियों के बीच थोड़े ही से रह जाएँगे, जहाँ वे लकड़ी और पत्थर से बने देवताओं की सेवा करेंगे।

व्यवस्थाविवरण 4:29

यहोवा लोगों को कब मिल जाएगा?

वह उन्हें तब मिल जाएगा जब वे अपने परमेश्वर को पुरे मन से और अपने सारे प्राण से ढूंढेंगे।

व्यवस्थाविवरण 4:30

कौन-सी बात लोगों को उनके परमेश्वर यहोवा की ओर फिरने और उसकी मानने के लिए प्रेरित करेगी?

जब वे संकट में पड़ेंगे और सब विपत्तियाँ उन पर आ पड़ेंगी, तब वे यहोवा की ओर फिरेंगे और उसकी मानेंगे।

व्यवस्थाविवरण 4:34

जब लोग मिस्र में थे, तब परमेश्वर ने उनके लिए क्या किया?

परमेश्वर ने उन्हें एक जाति से दूसरी जाति के बीच से निकालने को परीक्षा, और चिन्ह, और चमत्कार, और युद्ध, और बलवन्त हाथ, और बढ़ाई हुई भुजा से ऐसे बड़े भयानक काम किए।

व्यवस्थाविवरण 4:35–36

यहोवा ने लोगों के साथ क्या किया ताकि वे जान ले कि यहोवा ही परमेश्वर है?

उसने उन्हें आकाश में से अपनी वाणी सुनाई, और पृथ्वी पर अपनी बड़ी आग दिखाई।

व्यवस्थाविवरण 4:37–38

यहोवा ने इस्राएल के लिए क्या किया क्योंकि उसने उनके पितरों से प्रेम रखा?

उसने उनके वंशजों को चुन लिया और प्रत्यक्ष होकर उन्हें अपने बड़े सामर्थ्य के द्वारा मिस्र से निकाल लाया। बड़ी और सामर्थी जातियों को उनके आगे से निकालकर उनके देश में पहुँचाया।

व्यवस्थाविवरण 4:41–42

यदि कोई व्यक्ति बिना जाने किसी को मार डाले, तो वह कहाँ भाग सकता है?

वह उन तीन नगरों में से किसी एक में भागकर शरण ले सकता था, जो मूसा ने यरदन के पार पूर्व की ओर अलग किए था।

व्यवस्थाविवरण 4:44–45

मूसा ने इस्राएलियों के सामने क्या प्रस्तुत किया?

उसने इस्राएलियों को व्यवस्था दी; ये वे चेतावनियाँ और नियम हैं जिन्हें मूसा ने इस्राएलियों को उस समय कह सुनाया जब वे मिस्र से निकले थे।

व्यवस्थाविवरण 4:48–49

अमोरियों के दो राजाओं का देश कितना दूर तक फैला हुआ था?

यह देश अर्नोन के नाले के छोरवाले अरोएर से लेकर सिय्योन पर्वत, जो हेर्मोन भी कहलाता है, उस पर्वत तक का सारा देश, और पिसगा की ढलान के नीचे के अराबा के ताल तक, यरदन पार पूर्व की ओर का सारा अराबा है।

व्यवस्थाविवरण 5:2–3

यहोवा ने होरेब पर किसके साथ वाचा की?

यहोवा ने होरेब पर इस्राएल से वाचा बाँधी, जो उनके पितरों से नहीं, उन्हीं से बाँधी, जो यहाँ आज के दिन जीवित हैं।

व्यवस्थाविवरण 5:4–5

जब यहोवा ने अपना वचन लोगों को बताया, तो मूसा उनके और यहोवा के बीच क्यों खड़ा रहा?

क्योंकि वे आग से डर रहे थे, जिसमें से परमेश्वर बोल रहा था।

व्यवस्थाविवरण 5:6

यहोवा ने इस्राएल से क्या कहा कि वह कौन है?

उसने कहा, "तेरा परमेश्वर यहोवा, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश में से निकाल लाया है, वह मैं हूँ"।

व्यवस्थाविवरण 5:8

परमेश्वर ने इस्राएल से क्या न बनाने, दण्डवत् न करने या उपासना न करने के लिए कहा है?

वे कोई मूर्ति खोदकर न बनाए, न किसी की प्रतिमा बनाए जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है।

व्यवस्थाविवरण 5:9

पितरों द्वारा मूर्तियों के आगे दण्डवत् करने और उनकी उपासना करने की दुष्टता को यहोवा कैसे दण्डित करेगा?

यहोवा पितरों की दुष्टता का दण्ड उनके बेटों, पोतों और परपोतों को दिया करता है।

व्यवस्थाविवरण 5:10

यहोवा उन लोगों के लिए क्या करेगा जो उससे प्रेम रखते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं?

वह उन पर करुणा किया करता है।

व्यवस्थाविवरण 5:11

यहोवा किसे निर्दोष न ठहराएगा?

जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उनको निर्दोष न ठहराएगा।

व्यवस्थाविवरण 5:12–14

यहोवा सातवें दिन के विषय में क्या कहता है?

सातवाँ दिन उनके परमेश्वर यहोवा के लिए विश्रामदिन है, उन्हें इसको मानकर पवित्र रखना है, और उन्हें किसी भाँति का काम-काज नहीं करना है।

व्यवस्थाविवरण 5:15

यहोवा उन्हें विश्रामदिन मानने की आज्ञा क्यों देता है?

वह चाहता है कि वे इस बात को स्मरण रखें कि मिस्र देश में वे दास थे, और वहाँ से उनका परमेश्वर यहोवा उन्हें बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया।

व्यवस्थाविवरण 5:16

यदि लोग अपने पिता और अपनी माता का आदर करेंगे तो यहोवा ने उनके साथ क्या होने के लिए कहा है?

जो देश परमेश्वर उन्हें देगा, वे उस देश में बहुत दिन तक रहने पाएँगे और उनका भला होगा।

व्यवस्थाविवरण 5:17–20

उन्हें क्या न करने की आज्ञा दी गई?

उन्हें खून न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, और किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देने की आज्ञा दी गई है।

व्यवस्थाविवरण 5:22

यहोवा ने अपने वचन किस पर लिखे?

उसने उन्हें पत्थर की दो पटियाओं पर लिखकर मूसा को दे दिया।

व्यवस्थाविवरण 5:25

लोग यदि यहोवा का शब्द फिर सुनें, तो उन्होंने अपने साथ क्या घटित होने के लिए कहा?

लोग बड़ी आग से भस्म हो जाएँगे और मर ही जाएँगे।

व्यवस्थाविवरण 5:27

जब मूसा ने यहोवा के वचनों को उनके सामने दोहराया, तो लोगों ने क्या करने के लिए कहा?

उन्होंने कहा कि वे यहोवा के वचन को सुनेंगे और मानेंगे।

व्यवस्थाविवरण 5:28

यहोवा ने लोगों की प्रतिक्रिया के बारे में क्या कहा?

उसने कहा कि उसने लोगों की बातें सुनीं और वे ठीक ही थीं।

व्यवस्थाविवरण 5:33

मूसा ने लोगों से क्या कहा कि यदि वे यहोवा की सारी विधियों और आज्ञाओं का पालन करें जो मूसा ने उन्हें दी थीं, तो उनके साथ क्या होगा?

यदि वे आज्ञाओं का पालन करेंगे, तो वे जीवित रहेंगे, और उनका भला होगा और वे उस देश में बहुत दिनों के लिए बने रहेंगे।

व्यवस्थाविवरण 6:2

यदि इस्राएली और उनके बच्चे अपने जीवन भर यहोवा की सभी विधियों और आज्ञाओं पर चलते रहें, तो उनके साथ क्या होगा?

यदि वे जीवन भर विधियों और आज्ञाओं पर चलते रहें, तो वे बहुत दिन तक बने रहेंगे।

व्यवस्थाविवरण 6:3

मूसा ने उस देश का वर्णन कैसे किया जिसमें लोग जा रहे थे?

उसने कहा कि उस देश में दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं।

व्यवस्थाविवरण 6:5

इस्राएल को यहोवा से प्रेम किस प्रकार रखना चाहिए?

उन्हें यहोवा से अपने सारे मन, और सारे प्राण, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 6:6–7

लोगों को अपने मन में रहने वाली आज्ञाएँ अपने बाल-बच्चों को कब समझाकर सिखानी चाहिए?

उन्हें अपने बाल-बच्चों को घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इन आज्ञाओं को सिखाना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 6:10–12

इस्राएल को यहोवा को कब नहीं भूलना चाहिए?

उन्हें यहोवा को नहीं भूलना चाहिए, जब वे उस देश में खाके तृप्त हो, जिस देश के विषय में यहोवा ने उनके पूर्वजों से शपथ खाई।

व्यवस्थाविवरण 6:15

यदि इस्राएल पराए देवताओं के पीछे हो लेता है और यहोवा, जो जलन रखनेवाला परमेश्वर है, का कोप भड़काए तो क्या होगा?

यदि यहोवा का कोप उन पर भड़के, तो वह उनको पृथ्वी पर से नष्ट कर डालेगा।

व्यवस्थाविवरण 6:16

उन्होंने मस्सा में क्या किया जो उन्हें फिर से नहीं करना चाहिए?

उन्होंने मस्सा में यहोवा की परीक्षा की थी।

व्यवस्थाविवरण 6:20–23

जब लोगों की संतान उनसे यहोवा द्वारा दी गई चेतावनियों, विधियों और नियमों के बारे में पूछे तो उन्हें कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए?

उन्हें अपनी संतान से कहना चाहिए कि जब वे मिस्र में फ़िरौन के दास थे, तब यहोवा बलवन्त हाथ से उनको मिस्र में से निकाल ले आया और वह देश, जिसके विषय में उसने उनके पूर्वजों से शपथ खाई थी वह उनको सौंप दे।

व्यवस्थाविवरण 6:24

लोगों को यहोवा का भय क्यों मानना चाहिए?

उन्हें उसका भय मानना चाहिए ताकि सदैव उनका भला हो, और वह उनको जीवित रखे।

व्यवस्थाविवरण 7:2

लोगों को उस देश के निवासियों के साथ क्या करना चाहिए जिसे यहोवा उन्हें अधिकार में देने जा रहा है?

उन्हें उस पर हमला करना चाहिए और पूरी रीति से नष्ट कर डालना है।

व्यवस्थाविवरण 7:2–3

इस्राएलियों को उन राष्ट्रों के लोगों के साथ क्या नहीं करना चाहिए?

उन्हें उनके साथ वाचा न बाँधना, उन पर दया न करना, और न ही उनके बेटे-बेटियों की अपने बेटे-बेटियों से शादी करानी चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 7:5

इस्राएल को इन देशों के लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

उन्हें उनकी वेदियों को ढा देना, उनकी लाठों को तोड़ डालना, उनकी अशेरा नामक मूर्तियों को काट काटकर गिरा देना, और उनकी खुदी हुई मूर्तियों को आग में जला देना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 7:8

यहोवा ने चुने हुए लोगों से की गई शपथ कैसे पूरी की?

यहोवा ने अपनी शपथ, उन्हें दासत्व के घर में से, फ़िरौन के हाथ से छुड़ाकर पूरी की।

व्यवस्थाविवरण 7:9

उन लोगों का क्या होगा जो यहोवा से प्रेम रखते और उसकी आज्ञाएँ मानते हैं?

जो लोग उससे प्रेम रखते और उसकी आज्ञाएँ मानते हैं, उनके साथ परमेश्वर हजार पीढ़ी तक अपनी वाचा का पालन करेगा और उन पर करुणा करता रहेगा।

व्यवस्थाविवरण 7:12–13

यदि लोग यहोवा के नियमों को मानेंगे, तो वे किस प्रकार से आशीषित होंगे?

परमेश्वर उन्हें गिनती में बढ़ाएगा, और अन्न, दाखमधु, टटके तेल, भूमि की उपज पर आशीष देगा और उनकी गाय-बैल और भेड़-बकरियों की बढ़ती करेगा।

व्यवस्थाविवरण 7:17–19

परमेश्वर उन जातियों के साथ क्या करेगा जिनसे इस्राएल डरता है?

परमेश्वर उन सब लोगों पर भी बड़ी विपत्तियाँ और अन्य सामर्थ्य के काम दिखाएगा जो इस्राएल ने मिस्र में देखे थे।

व्यवस्थाविवरण 7:20

परमेश्वर उनके बीच बर्रे कब तक भेजेगा?

परमेश्वर उनके बीच बर्रे भेजेगा, यहाँ तक कि उनमें से जो बचकर छिप जाएँगे वे भी इस्राएल के सामने से नाश हो जाएँ।

व्यवस्थाविवरण 7:21–22

लोगों को लोगों के बीच भय क्यों न खाना चाहिए?

परमेश्वर, जो महान और भययोग्य है, वह इस्राएलियों के बीच में है।

व्यवस्थाविवरण 7:23

परमेश्वर लोगों को जातियों पर विजय कैसे दिलाएगा?

परमेश्वर युद्ध में जब तक वे सत्यानाश न हो जाएँ तब तक उनको अति व्याकुल करता रहेगा।

व्यवस्थाविवरण 7:25–26

उन्हें जातियों के देवताओं के साथ क्या करना चाहिए?

उन्हें देवताओं की खुदी हुई मूर्तियों को आग में जला देना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 8:2

इस्राएल के लोगों को क्या स्मरण रखना चाहिए?

उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि परमेश्वर ने चालीस वर्षों तक जंगल में कैसे उन्हें नम्र किया और परीक्षा की।

व्यवस्थाविवरण 8:3

यहोवा ने क्यों लोगों को नम्र बनाया, भूखा होने दिया, और उन्हें मन्ना खिलाया?

उसने ये सब इसलिए किया ताकि उन्हें सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहता, परन्तु जो-जो वचन यहोवा के मुँह से निकलते हैं उन ही से वह जीवित रहता है।

व्यवस्थाविवरण 8:4

लोगों ने जंगल में चालीस वर्ष कैसे बिताए?

उनके वस्त्र पुराने न हुए, और उनके तन से भी नहीं गिरे, और न उनके पाँव फूले।

व्यवस्थाविवरण 8:5

यहोवा ने इस्राएलियों को कैसे ताड़ना दी?

जैसे कोई अपने बेटे को ताड़ना देता है वैसे ही उनका परमेश्वर यहोवा उनको ताड़ना देता है।

व्यवस्थाविवरण 8:7–8

उस उत्तम देश में क्या-क्या है, जिसमें परमेश्वर उन्हें लिए जा रहा है?

वह देश जल की नदियों का, और तराइयों और पहाड़ों से निकले हुए गहरे-गहरे सोतों का देश है। फिर वह गेहूँ, जौ, दाखलताओं, अंजीरों, और अनारों का देश है; और तेलवाले जैतून और मधु का भी देश है।

व्यवस्थाविवरण 8:10

लोग यहोवा को धन्य क्यों मानेंगे?

वे उसे धन्य मानेंगे, उस उत्तम देश के कारण जो उनका परमेश्वर यहोवा उन्हें देगा।

व्यवस्थाविवरण 8:11

लोगों को क्या नहीं करने की याद दिलाई गई?

उन्हें यह स्मरण कराया गया कि कहीं ऐसा न हो कि वे यहोवा को भूलकर, उसकी आज्ञाओं को मानना छोड़ दे।

व्यवस्थाविवरण 8:13–14

लोग यहोवा को क्यों भूल सकते हैं, जो उन्हें मिस्र से बाहर लाया है?

जब उनके गाय-बैलों और भेड़-बकरियों की बढ़ती हो, और उनका सोना, चाँदी, और सब प्रकार का धन बढ़ जाए, तब उनके मन में अहंकार समा जाए, तो वे यहोवा को भूल सकते हैं।

व्यवस्थाविवरण 8:15–16

यहोवा ने इस्राएल के लोगों के लिए भयानक जंगल में जल और भोजन कैसे उपलब्ध कराया?

यहोवा ने उनके लिए चकमक की चट्टान से जल निकाला और उन्हें मन्ना खिलाया।

व्यवस्थाविवरण 8:19–20

लोगों के सामने जातियों के नष्ट होने का कारण क्या होगा?

यदि वे भूल जाते हैं कि उनकी संपत्ति कहाँ से आई है, और दूसरे देवताओं के पीछे हो लेते हैं, और यहोवा का वचन नहीं मानते हैं, तो वे नष्ट हो जाएँगे।

व्यवस्थाविवरण 9:1

इस्राएल के लोग कहाँ जाने की तैयारी कर रहे हैं?

इस्राएल यरदन पार जाने वाला है।

व्यवस्थाविवरण 9:3

इस्राएल के यरदन पार करने से पहले क्या घटित होगा?

उनके आगे भस्म करनेवाली आग के समान यहोवा पार जानेवाला है और वह उन जातियों का सत्यानाश करेगा।

व्यवस्थाविवरण 9:4

जब यहोवा उनके शत्रुओं को उनके सामने से निकाल देगा, तो मूसा ने लोगों से अपने मन में क्या नहीं सोचने के लिए कहा है?

उसने इस्राएल से कहा कि यह इस्राएल की धार्मिकता के कारण नहीं था कि यहोवा उन्हें इस देश का अधिकारी होने को लाया है।

व्यवस्थाविवरण 9:5

यरदन पार इस्राएल के सामने से परमेश्वर द्वारा जातियों को बाहर निकालने का क्या कारण है?

वह उन्हें उनकी दुष्टता के कारण बाहर निकाल रहा है, और यह भी कि जो वचन उसने अब्राहम, इसहाक, और याकूब, अर्थात् उनके पूर्वजों को शपथ खाकर दिया था, उसको वह पूरा करना चाहता है।

व्यवस्थाविवरण 9:7–8

यहोवा इस्राएल के लोगों से क्यों क्रोधित था?

वह क्रोधित होकर उन्हें नष्ट करना चाहता था, क्योंकि उन्होंने उसे क्रोधित किया और उससे बलवा ही बलवा करते आए।

व्यवस्थाविवरण 9:9

मूसा ने पहाड़ पर क्या खाया और पिया?

चालीस दिन और चालीस रात पर्वत पर उसने न तो रोटी खाई न पानी पिया।

व्यवस्थाविवरण 9:12

यहोवा ने मूसा से झटपट पहाड़ से नीचे जाने के लिए क्यों कहा?

यहोवा ने उससे कहा कि लोग बिगड़ गए हैं; जिस मार्ग पर चलने की आज्ञा उन्हें दी थी उसको उन्होंने झटपट छोड़ दिया है; अर्थात् उन्होंने तुरन्त अपने लिये एक मूर्ति ढालकर बना ली है।

व्यवस्थाविवरण 9:13–14

यहोवा ने क्यों कहा कि वह इस्राएल को नष्ट कर डालेगा और उनसे बढ़कर एक सामर्थी जाति को उत्पन्न करेगा?

यहोवा ने कहा कि उसने उन लोगों को देख लिया, वे हठीली जाति के लोग हैं।

व्यवस्थाविवरण 9:15–16

इस्राएल ने अपने पाप में क्या किया था?

उन्होंने यहोवा के विरुद्ध महापाप किया; और अपने लिए एक बछड़ा ढालकर बना लिया है।

व्यवस्थाविवरण 9:17–18

मूसा ने क्या किया जब उसने देखा कि लोगों ने यहोवा की दृष्टि में बुराई की है?

उसने पटियाओं को फेंक दिया, और उनकी आँखों के सामने उनको तोड़ डाला। वह यहोवा के सामने मुँह के बल गिर पड़ा, और पहले के समान, अर्थात् चालीस दिन और चालीस रात तक, न तो रोटी खाई और न पानी पिया।

व्यवस्थाविवरण 9:19–20

मूसा ने लोगों और हारून के लिए प्रार्थना क्यों की?

उसने प्रार्थना की क्योंकि यहोवा, लोगों और हारून से इतना क्रोधित और अप्रसन्न था कि उनका सत्यानाश करने को था।

व्यवस्थाविवरण 9:21

मूसा ने उस बछड़े के साथ क्या किया जो लोगों ने बनाया था?

मूसा ने वह बछड़ा लेकर, आग में डालकर फूँक दिया; और फिर उसे पीस-पीसकर ऐसा चूर चूरकर डाला कि वह धूल के समान जीर्ण हो गया; और उसकी उस राख को उस नदी में फेंक दिया जो पर्वत से निकलकर नीचे बहती थी।

व्यवस्थाविवरण 9:22–24

लोगों ने यहोवा को कैसे रिस दिलाई?

उन्होंने यहोवा की आज्ञा के विरुद्ध बलवा किया, और न तो उसका विश्वास किया, और न उसकी बात मानी।

व्यवस्थाविवरण 9:25–26

जब मूसा चालीस दिन और चालीस रात मुँह के बल पड़ा रहा, तो उसने क्या प्रार्थना की?

उसने प्रार्थना की कि यहोवा का प्रजारूपी निज भाग नष्ट न हो।

व्यवस्थाविवरण 9:27–28

मूसा ने यहोवा से क्या कहा कि देश के लोग क्या न कहें?

वह यहोवा से कहता है कि लोग ऐसा न कहें कि यहोवा उनसे बैर रखता था, इस कारण उसने उन्हें जंगल में लाकर मार डाला है।

व्यवस्थाविवरण 10:2

यहोवा ने मूसा से उन पत्थर की पटियाओं को कहाँ रखने के लिए बोला जिन पर यहोवा अपने वचन लिखेगा?

यहोवा ने उसे पत्थर की उन दो पटियाओं को लकड़ी के उस संदूक में रखने के लिए कहा, जिसे मूसा बनाएगा।

व्यवस्थाविवरण 10:4

जब मूसा पत्थर की पटियाओं को लेकर पहाड़ पर गया, तब यहोवा ने उन पर क्या लिखा?

यहोवा ने पहले की तरह ही पत्थर की पट्टिकाओं पर दस वचन लिखे।

व्यवस्थाविवरण 10:5

जब मूसा पर्वत से उतर आया, तो उसने दो पत्थर की पटियाओं को कहाँ रखा?

उसने उन्हें यहोवा की आज्ञा के अनुसार अपने बनवाए हुए संदूक में धर दिया।

व्यवस्थाविवरण 10:6

मोसेरा में हारून के साथ क्या हुआ था?

मोसेरा में हारून मर गया, और उसको वहीं मिट्टी दी गई।

व्यवस्थाविवरण 10:8

यहोवा ने वाचा का संदूक उठाने और यहोवा के सम्मुख खड़े होने के लिए किस गोत्र को चुना?

यहोवा ने लेवी के गोत्र को चुना ताकि वह वाचा का सन्दूक उठाया करें, और यहोवा के सम्मुख खड़े होकर उसकी सेवा टहल किया करें, और उसके नाम से आशीर्वाद दिया करें।

व्यवस्थाविवरण 10:10

इस बार मूसा कितने समय तक पर्वत पर ठहरा रहा?

वह पहले के समान उस पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात ठहरा रहा।

व्यवस्थाविवरण 10:12–13

मूसा ने क्या कहा कि यहोवा इस्राएल से क्या चाहता है?

यहोवा इस्राएल से चाहता है कि वे अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानें, और उसके सारे मार्गों पर चले, उससे प्रेम रखे, और अपने पूरे मन और अपने सारे प्राण से उसकी सेवा करे, और यहोवा की जो-जो आज्ञा और विधि हैं उनको ग्रहण करे।

व्यवस्थाविवरण 10:16

मूसा ने लोगों को खतना कराने के लिए क्यों कहा?

उसने उन्हें अपने-अपने हृदय का खतना करने के लिए कहा।

व्यवस्थाविवरण 10:19

इस्राएल को परदेशियों से प्रेम क्यों रखना चाहिए?

इस्राएल को परदेशियों से प्रेम भाव रखना चाहिए, क्योंकि वे भी मिस्र देश में परदेशी थे।

व्यवस्थाविवरण 10:22

परमेश्वर ने मिस्र में गए पुरखाओं को कैसे आशीषित किया?

जब वे मिस्र में गए तब सत्तर ही मनुष्य थे, और अब परमेश्वर ने उनकी गिनती आकाश के तारों के समान बहुत कर दी है।

व्यवस्थाविवरण 11:1

मूसा लोगों से यहोवा की कौन सी चार बातें हमेशा याद रखने के लिए कहते हैं?

वह उन्हें जो कुछ सौंपा है अर्थात् यहोवा की शिक्षाओं, उसकी विधियों, नियमों और आज्ञाओं का नित्य पालन करने के लिए कहता है।

व्यवस्थाविवरण 11:2

किसने यहोवा की ताड़ना और मिस्र में उसके सामर्थ्य के काम को न देखा और न जाना है?

इस्राएलियों के बाल-बच्चों ने मिस्र में यहोवा की ताड़ना और सामर्थ्य के काम के बारे में न तो कुछ देखा और न जाना है।

व्यवस्थाविवरण 11:4

जब मिस्र की सेना ने इस्राएल का पीछा किया, तो यहोवा ने उन्हें पराजित करने के लिए क्या उपाय किया?

जब वे उनका पीछा कर रहे थे तब उसने उनको लाल समुद्र में डुबोकर नष्ट कर डाला।

व्यवस्थाविवरण 11:7

इस्राएलियों की आँखों ने क्या देखा है?

यहोवा के इन सब बड़े-बड़े कामों को इस्राएलियों ने अपनी आँखों से देखा है।

व्यवस्थाविवरण 11:8–9

यदि लोग सभी आज्ञाओं को माना करें तो उनके साथ क्या होगा?

यदि वे उन सभी आज्ञाओं को माना करें तो सामर्थी होकर उस देश में प्रवेश करके उसके अधिकारी हो जाएँगे और उस देश में बहुत दिन रहने पाएँगे।

व्यवस्थाविवरण 11:11

प्रतिज्ञा किया गया देश, मिस्र के देश से कैसे और क्यों भिन्न है?

यह देश पहाड़ों और तराइयों का देश है, और आकाश की वर्षा के जल से सींचता है।

व्यवस्थाविवरण 11:14

यदि वे उसकी आज्ञाओं को सुनकर, अपने सम्पूर्ण मन और सारे प्राण के साथ उससे प्रेम रखे और उसकी सेवा करते रहे, तो यहोवा उन्हें क्या देगा?

यहोवा उनके देश में बरसात के आदि और अन्त दोनों समयों की वर्षा को अपने-अपने समय पर बरसाएगा, जिससे वे अपना अन्न, नया दाखमधु, और टटका तेल संचय कर सकेंगे।

व्यवस्थाविवरण 11:17

यदि लोग बहककर दूसरे देवताओं की पूजा करने लगे, तो यहोवा क्या करेगा?

यहोवा का कोप उन पर भड़केगा, और वह आकाश की वर्षा बंद कर देगा।

व्यवस्थाविवरण 11:19

इस्राएल के लोगों को अपने बच्चों को यहोवा की आज्ञाएँ कब सिखानी चाहिए?

उन्हें अपने बच्चों को आज्ञाएँ, घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते-उठते इनकी चर्चा करके सिखानी चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 11:21

लोगों को क्या करना चाहिए ताकि उनके और उनके बच्चे दीर्घायु हों?

वे इन आज्ञाओं को अपने-अपने घर के चौखट के बाजुओं और अपने फाटकों के ऊपर लिखवाएंगे।

व्यवस्थाविवरण 11:22–23

यदि लोग यहोवा की सभी आज्ञाओं को माने और उनसे लिपटे रहें, तो वह उनके लिए क्या करेगा?

यहोवा उन सब जातियों को उनके आगे से निकाल डालेगा, और वे अपने से बड़ी और सामर्थी जातियों के अधिकारी हो जाएँगे।

व्यवस्थाविवरण 11:25

इस्राएल के सामने कोई भी क्यों खड़ा न रह सकेगा?

यहोवा उस भूमि पर सब रहनेवालों के मन में इस्राएल का डर और थरथराहट उत्पन्न कर देगा।

व्यवस्थाविवरण 11:26

उस दिन मूसा ने इस्राएल के आगे क्या रख दिया?

उसने उनके आगे आशीष और श्राप दोनों रख दिए।

व्यवस्थाविवरण 11:31

देश के अधिकारी होने के लिए लोगों को कहाँ जाना होगा?

उन्हें उस देश के अधिकारी होकर उसमें निवास करने के लिए यरदन पार जाना होगा।

व्यवस्थाविवरण 12:2

मूसा ने इस्राएलियों से किन स्थानों को नष्ट करने के लिए कहा?

उन्हें उन सभी स्थानों को पूरी रीति से नष्ट करना था, जहाँ, जिन जातियों के इस्राएली अधिकारी होंगे उन्होंने अपने देवताओं की उपासना की थी।

व्यवस्थाविवरण 12:3

यहोवा इस्राएल के लोगों को जातियों के देवताओं के नामों के साथ क्या करने की आज्ञा देता है?

उसने इस्राएल से कहा कि उस देश में से उनके नाम तक मिटा दिए जाएँ।

व्यवस्थाविवरण 12:5

इस्राएल के लोगों को अपने होमबलि, और मेलबली, और दशमांस और भेंटें कहाँ ले जाने थे?

उन्हें उस स्थान पर ले जाना था, जो स्थान उनका परमेश्वर यहोवा चुन लेगा।

व्यवस्थाविवरण 12:8

इस्राएल के लोग किस प्रकार के कार्य कर रहे थे?

जो काम जिसको भाता है अर्थात् जिसकी दृष्टि में जो सही लगता, वे वही कर रहे थे।

व्यवस्थाविवरण 12:10

जब इस्राएल यरदन पार जाकर बस जाए, तो यहोवा उन्हें किस प्रकार का विश्राम देगा?

वह उनके चारों ओर के सब शत्रुओं से उन्हें विश्राम देगा, ताकि वे सुरक्षा में रह सकें।

व्यवस्थाविवरण 12:15

इस्राएल किन जानवरों को मारकर खा सकेगा?

इस्राएल अपने सब फाटकों के भीतर पशु मारकर खा सकेगा, शुद्ध और अशुद्ध मनुष्य दोनों खा सकेंगे, जैसे कि चिकारे और हिरन का माँस।

व्यवस्थाविवरण 12:16

इस्राएलियों को क्या खाने की अनुमति नहीं थी?

इस्राएल को लहू खाने की अनुमति नहीं थी; उन्हें उसे जल के समान भूमि पर उण्डेल देना था।

व्यवस्थाविवरण 12:17

इस्राएलियों से कहाँ पर अपने दशमांश और बलिदान नहीं खाने के लिए कहा गया है?

वे उन्हें अपने सब फाटकों के भीतर नहीं खा सकते थे।

व्यवस्थाविवरण 12:18

इस्राएल के लोगों को अपने दशमांश और बलिदान कहाँ खाने थे?

उन्हें अपने परमेश्वर यहोवा के सामने उसी स्थान पर खाना था, जिसे वह चुनेगा।

व्यवस्थाविवरण 12:19

इस्राएल को क्या नहीं भूलने के लिए कहा गया था?

उन्हें कहा गया कि जब तक वे इस्राएल की भूमि पर जीवित रहे तब तक लेवियों को न छोड़े।

व्यवस्थाविवरण 12:20

जब उनका परमेश्वर यहोवा अपने वचन के अनुसार उनका देश बढ़ाए, तो इस्राएल क्या खा सकेगा?

जो माँस इस्राएल का जी चाहे वही खा सकेगा।

व्यवस्थाविवरण 12:21

जो स्थान उनका परमेश्वर यहोवा अपना नाम बनाए रखने के लिए चुन ले, वह यदि उनसे बहुत दूर हो, तो इस्राएल क्या खा सकेगा?

जो स्थान परमेश्वर यहोवा अपना नाम बनाए रखने के लिए चुन ले, वह यदि उनसे बहुत दूर हो, तो जो गाय-बैल भेड़-बकरी यहोवा ने उन्हें दी हों, मारकर खा सकेगा।

व्यवस्थाविवरण 12:23–24

इस्राएल को प्राण के लहू के साथ क्या करना चाहिए?

इस्राएल को प्राण लहू को नहीं खाना चाहिए, बल्कि उसे जल के समान भूमि पर उण्डेल देना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 12:26

इस्राएल को क्या लेकर उस स्थान को जाना चाहिए, जिसे यहोवा चुन लेगा?

इस्राएल जब कोई वस्तु पवित्र करे, या मन्नत माने, तो ऐसी वस्तुएँ लेकर उस स्थान को जाना चाहिए जिसको यहोवा चुन लेगा।

व्यवस्थाविवरण 12:27

इस्राएल को अपने होमबलियों के माँस और लहू, दोनों को अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी पर कहाँ चढ़ाना है?

इस्राएल को उस स्थान को जाना है जिसे यहोवा चुन लेगा ताकि वे अपने होमबलियों के माँस और लहू दोनों को अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी पर चढ़ा सकें।

व्यवस्थाविवरण 12:28

इस्राएल को क्या आज्ञा दी गई है ताकि उसके और उसके बाद उसके वंश का भी सदा भला होता रहे?

इस्राएल को उन बातों को जिनकी आज्ञा यहोवा सुनाता है, चित्त लगाकर सुननी है, और जब वे वह काम करे जो उनके परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में भला और ठीक है, तब उसका और उसके बाद उसके वंश का भी सदा भला होता रहे।

व्यवस्थाविवरण 12:30

जब यहोवा उन जातियों को इस्राएल के आगे से नष्ट करे और वह उनका अधिकारी होकर उनके देश में बस जाए, तो यहोवा इस्राएल को किस बारे में सावधान रहने की आज्ञा देता है?

इस्राएल को सावधान रहना है, ताकि वे उनसे पहले की उन जातियों के देवताओं का अनुसरण करने या उनके सम्बन्ध में पूछताछ करके फँस न जाए।

व्यवस्थाविवरण 12:31

अन्य जातियों ने अपने देवताओं की उपासना के लिए अपने बेटे-बेटियों के साथ क्या किया?

अन्य जातियों ने अपने बेटे-बेटियों को अपने देवताओं के लिए अग्नि में डालकर उन्हे जला देती हैं।

व्यवस्थाविवरण 13:3

इस्राएल के लोगों को उस भविष्यद्वक्ता या स्वप्न देखने वाले के वचन पर कभी कान क्यों न रखना चाहिए? जो कोई चिन्ह या चमत्कार दिखाता है और कहता है, "आओ हम पराए देवताओं के अनुयायी होकर, जिनसे तुम अब तक अनजान रहे, उनकी पूजा करें"।

इस्राएल के लोगों को इस पर कभी कान न रखना चाहिए, क्योंकि यहोवा उनकी परीक्षा लेगा, जिससे यह जान ले, कि वे उससे अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम रखते हैं या नहीं।

व्यवस्थाविवरण 13:5

इस्राएल के लोगों को उस भविष्यद्वक्ता या स्वप्न देखनेवाले के साथ क्या करना चाहिए जो उन्हें अन्य देवताओं की पूजा करने के लिए प्रेरित करता है?

उन्हें उस भविष्यद्वक्ता या स्वप्न देखने वाले को मार डालना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 13:9

इस्राएल के लोगों को ऐसे व्यक्ति के साथ क्या करने की आज्ञा दी गई है: जो उन्हें यह कहकर फुसलाने लगे, 'आओ हम दूसरे देवताओं की उपासना या पूजा करें, जिन्हें तूम न जानते थे?

उन्हें उसको अवश्य घात करना चाहिए जो उन्हें दूसरे देवताओं की उपासना या पूजा के लिए फुसलाता है।

व्यवस्थाविवरण 13:10

इस्राएल के लोगों को उस व्यक्ति को कैसे मारना चाहिए जो उन्हें उनके परमेश्वर यहोवा से बहकाने का यत्न करता है?

उन्हें उस व्यक्ति पर ऐसा पथराव करना है कि वह मर जाए।

व्यवस्थाविवरण 13:14

यदि इस्राएल के लोग यह कहते हुए सुने कि उनके नगर में से निकलकर कुछ अधर्मी पुरुष यह कहकर बहका दे कि "आओ हम अन्य देवताओं की जिनसे अब तक अनजान रहे उपासना करें" तो उन्हें क्या करना चाहिए?

उन्हें इसे खोजना, और भली भाँति पता लगाना चाहिए कि यह बात सच हो।

व्यवस्थाविवरण 13:15

यदि इस्राएल को पता चले कि यह सच है कि वहाँ के निवासियों को अन्य देवताओं की पूजा करने के लिए कहा गया था, तो उन्हें उस नगर के साथ क्या करना चाहिए?

अवश्य उस नगर के निवासियों को तलवार से मार डालना चाहिए और उसको पूरी तरह से सत्यानाश कर देना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 13:17

सत्यानाश की वस्तुओं के साथ क्या नहीं किया जाना चाहिए?

सत्यानाश की वस्तु इस्राएल के हाथ न लगने पाए; जिससे यहोवा अपने भड़के हुए कोप से शान्त हो जाए।

व्यवस्थाविवरण 14:1

मूसा ने यहोवा के लोगों को क्या न करने की आज्ञा दी?

उन्हें मरे हुओं के कारण न तो अपना शरीर चीरना, और न भौहों के बाल मुण्डाना है।

व्यवस्थाविवरण 14:6

वे कौन सी दो विशेषताएँ हैं जिनके आधार पर इस्राएलियों को जानवरों को खाने की अनुमति दी गई है?

पशुओं में से जितने पशु चिरे या फटे खुरवाले और पागुर करनेवाले होते हैं उनका माँस इस्राएली खा सकते हैं।

व्यवस्थाविवरण 14:8

सूअर का माँस क्यों नहीं खाना चाहिए?

सूअर, जो चिरे खुर का तो होता है परन्तु पागुर नहीं करता, इस कारण वह इस्राएलियों के लिए अशुद्ध है।

व्यवस्थाविवरण 14:9

जलजन्तु की क्या विशेषताएँ हैं, जिन्हें इस्राएली खा सकते हैं?

जितनों के पंख और छिलके होते हैं, उनमें से वे इन्हें खा सकते हैं।

व्यवस्थाविवरण 14:19

क्या इस्राएलियों को रेंगने वाले जंतुओं को खाने की अनुमति है?

जितने रेंगनेवाले जन्तु हैं वे सब उनके लिए अशुद्ध हैं; इसलिए उन्हें नहीं खाना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 14:21

क्या इस्राएली ऐसे किसी भी जीव को खा सकते हैं, जो अपनी मृत्यु से मर जाए?

जो अपनी मृत्यु से मर जाए उसे वे नहीं खा सकते थे; उसे वे किसी परदेशी को खाने के लिए दे सकते हैं।

व्यवस्थाविवरण 14:21 (#2)

इस्राएली एक बकरी के बच्चे के साथ क्या नहीं कर सकते थे?

उन्हें बकरी का बच्चा उसकी माता के दूध में नहीं पकाना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 14:22

इस्राएलियों को अपनी बीज की सारी उपज के साथ क्या करना चाहिए?

इस्राएलियों को बीज की सारी उपज में से उसका दशमांश देना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 14:23

इस्राएलियों को अपने अन्न, और नये दाखमधु, और टटके तेल का दशमांश, और अपने गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहिलौठे को कहाँ खाना चाहिए?

इस्राएल को अपने अन्न, और नये दाखमधु, और टटके तेल का दशमांश, और अपने गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहिलौठे को, जिस स्थान को उनका परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिए चुन ले, उस स्थान पर खाना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 14:24–25

यदि वह स्थान, जिसे यहोवा अपना नाम बनाएँ रखने के लिए चुन लेगा बहुत दूर हो, तो इस्राएलियों को दशमांश के साथ क्या करने की अनुमति है?

वहाँ की यात्रा उनके लिए इतनी लम्बी हो कि वे अपने परमेश्वर यहोवा की आशीष से मिली हुई वस्तुएँ वहाँ न ले जा सके, तो उसे बेचकर, रुपये को बाँध, हाथ में लिए हुए उस स्थान पर जा सकते हैं, जो परमेश्वर यहोवा चुन लेगा।

व्यवस्थाविवरण 14:27

इस्राएलियों के साथ किसका भाग न होगा और किसे नहीं छोड़ना है?

फाटकों के भीतर के लेवीय को न छोड़ना है, क्योंकि उनका इस्राएलियों के साथ कोई भाग या अंश न होगा।

व्यवस्थाविवरण 14:28–29

इस्राएलियों को तीन-तीन वर्ष के बीतने पर क्या करने की आज्ञा दी गई?

तीन-तीन वर्ष के बीतने पर तीसरे वर्ष की उपज का सारा दशमांश निकालकर अपने फाटकों के भीतर इकट्ठा कर रखना है और ताकि लेवीय, परदेशी, और अनाथ, और विधवाएँ पेट भर खाएँ।

व्यवस्थाविवरण 15:1

हर सात वर्ष के अन्त में इस्राएलियों को क्या करना चाहिए?

हर सात वर्षों के अन्त में इस्राएलियों को ऋण छोड़ देना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 15:2

हर सात साल में हर ऋण को क्यों छोड़ देना चाहिए?

हर देनेवाला अपने पड़ोसी या अपने भाई को जो उसने उधार दिया है, उसे छोड़ देगा क्योंकि यहोवा के ऋण की क्षमा की घोषणा की गई है।

व्यवस्थाविवरण 15:3

इस्राएली हर सात साल के अन्त में किससे भुगतान की माँग कर सकते हैं?

इस्राएली परदेशी मनुष्य से ऋण के भुगतान की माँग जारी रख सकते हैं।

व्यवस्थाविवरण 15:4

इस्राएलियों में कोई दरिद्र क्यों नहीं होगा?

यहोवा निश्चित रूप से उन्हें उस भूमि में आशीष देंगे जो वह इस्राएल को उसके भाग के रूप में देते हैं।

व्यवस्थाविवरण 15:6

इस्राएलियों के साथ क्या होगा जिससे यह प्रदर्शित होगा कि यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर, ने उन्हें आशीष दिया है?

इस्राएल कई जातियों को उधार देगा, लेकिन स्वयं उधार नहीं लेगा; इस्राएल कई जातियों पर प्रभुता करेगा, लेकिन अन्य जातियाँ इस्राएल पर प्रभुता नहीं करेंगे।

व्यवस्थाविवरण 15:7

यदि उनके बीच कोई दरिद्र व्यक्ति हो तो इस्राएलियों को क्या करने के लिए कहा गया है?

इस्राएलियों से कहा गया है कि वे अपने हृदय को कठोर न करें और अपने दरिद्र भाई के प्रति अपनी मुट्ठी कड़ी न करें।

व्यवस्थाविवरण 15:9

जब सातवाँ वर्ष, अर्थात् छुटकारे का वर्ष, निकट हो, तो इस्राएलियों को क्या नहीं करने से सावधान रहना चाहिए?

उन्हें उस समय एक दरिद्र भाई को देने से इंकार नहीं करना चाहिए जब सातवाँ वर्ष, अर्थात छुटकारे का वर्ष, निकट हो।

व्यवस्थाविवरण 15:10

जब सातवाँ वर्ष निकट होगा तब दरिद्र को देने के बदले में यहोवा इस्राएलियों के लिये क्या करेंगे?

यहोवा इस्राएलियों को उनके सभी कार्यों में और हर उस चीज़ में आशीष देंगे, जिसमें वे अपना हाथ लगाते हैं।

व्यवस्थाविवरण 15:11

इस्राएल को अपने भाइयों, जरूरतमंदों और दरिद्रों के लिए अपने हाथ ढीले करने का आदेश क्यों दिया गया है?

देश में दरिद्र कभी समाप्त नहीं होंगे।

व्यवस्थाविवरण 15:14

इस्राएलियों को सातवें वर्ष में स्वतंत्र होने के लिए छोड़े गए इब्री पुरुष या इब्री स्त्री को क्या प्रदान करने के लिए निर्देशित किया गया है?

जैसा उनके परमेश्वर यहोवा ने इस्राएलियों को आशीर्वाद दिया है, वैसे ही उन्हें भेड़-बकरियों में से, खलिहानों में से, और दाखमधु के कुण्ड में से सेंतमेंत देकर उनकी व्यवस्था करनी चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 15:15

इस्राएलियों को क्या याद रखना चाहिए जब वे जिसे मुक्त करते हैं उसे देते हैं?

इस्राएलियों से कहा गया है कि वे यह याद रखें कि वे मिस्र देश में दास थे।

व्यवस्थाविवरण 15:16–17

एक इस्राएली को उस दास या दासी के साथ क्या करना चाहिए जो कहता है "मैं तेरे पास से न जाऊँगा"?

इस्राएली को एक सुतारी लेकर उसके कान किवाड़ पर लगाकर छेदना है, और वह इस्राएली का दास या दासी सदा के लिए हो जाएगा।

व्यवस्थाविवरण 15:18

इस्राएलियों के लिए दास को स्वतंत्र करना कठिन क्यों नहीं होना चाहिए?

यह कठिन नहीं होना चाहिए क्योंकि उन्होंने उन्हें छह वर्षों तक सेवा दी है और एक मजदूर की तुलना में दोगुना मूल्य दिया है।

व्यवस्थाविवरण 15:19–20

इस्राएल के लोगों को अपने झुंड और भेड़-बकरियों के पहलौठे नर के साथ क्या करना चाहिए?

उन्हें यहोवा के सामने अपने घराने के साथ उस स्थान पर, जिसे यहोवा चुनेंगे, हर साल पहलौठा खाना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 15:21

यदि पहलौठा पशु लंगड़ा है, अंधा है या उसमें कोई भी दोष है, तो इस्राएलियों को उसके साथ क्या करना चाहिए?

उन्हें इसे यहोवा को बलिदान नहीं करना चाहिए, बल्कि इसके बजाय उन्हें इसे अपने द्वारों के भीतर ही खाना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 15:23

इस्राएलियों को अपने पहिलौठे, जिस में दोष है उसका क्या करना है?

उन्हें पहिलौठे के लहू को जल के समान भूमि पर उण्डेल देना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 16:1

इस्राएलियों को आबीब का महीना क्यों मानना चाहिए, और अपने परमेश्वर यहोवा के लिये फसह क्यों मानना चाहिए?

यहोवा ने अबीब महीने की रात में इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकाला।

व्यवस्थाविवरण 16:2

इस्राएली फसह मनाने के लिए क्या करेंगे?

इस्राएली कुछ भेड़-बकरियों और गाय-बैलों का बलिदान उस स्थान पर करेंगे जिसे यहोवा ने अपने नाम के निवासस्थान के रूप में चुना है।

व्यवस्थाविवरण 16:3–4

इस्राएलियों को सात दिन तक अपने सारे देश में अखमीरी रोटी वा ख़मीर क्यों नहीं खाना चाहिए?

उन्हें ख़मीरी रोटी नहीं खानी चाहिए और न ही ख़मीर खाना चाहिए क्योंकि वे मिस्र देश से उतावली करके निकले थे।

व्यवस्थाविवरण 16:4

इस्राएली पहले दिन संध्या को जो माँस बलि करते हैं उसका उन्हें क्या करना चाहिए?

इस्राएलियों को पहले दिन की संध्या को बलिदान किए गए किसी भी माँस को हटा देना चाहिए ताकि वह सुबह तक रहने न पाए।

व्यवस्थाविवरण 16:6

इस्राएलियों को फसह की पशुबलि कहाँ पर करनी चाहिए?

उन्हें उस स्थान पर बलिदान करना है जिसे यहोवा अपने नाम का निवास करने के रूप में चुनेंगे।

व्यवस्थाविवरण 16:6 (#2)

फसह का बलिदान कब किया जाएगा?

फसह का बलिदान सूर्यास्त के समय अर्थात् सूरज डूबने पर, वर्ष के उसी समय किया जाना है जब आप मिस्र से बाहर आए थे।

व्यवस्थाविवरण 16:8

इस्राएलियों को फसह मनाते समय पहले छह दिनों में क्या करना चाहिए?

इस्राएलियों को छह दिनों तक अख़मीरी रोटी खानी चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 16:8 (#2)

फसह मनाते समय सातवें दिन इस्राएलियों को क्या करना चाहिए?

सातवें दिन, उन्हें एक महासभा करनी चाहिए और कोई काम-काज नहीं करना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 16:9–10

इस्राएली यहोवा के लिए सप्ताहों के पर्व की शुरुआत कैसे निर्धारित करते हैं?

इस्राएली उस समय से सात सप्ताह गिनेंगे जब वे खेत पर हँसुआ लगाना आरम्भ करेंगे।

व्यवस्थाविवरण 16:10

सप्ताहों के पर्व पर इस्राएली क्या दान देते हैं?

उन्हें यहोवा को एक स्वेच्छाबलि देनी होगी, परमेश्वर यहोवा की आशीष के अनुसार।

व्यवस्थाविवरण 16:12

सप्ताहों के पर्व के दौरान इस्राएल में सभी को, जिसमें परदेशी भी शामिल हैं, क्या स्मरण रखना चाहिए?

उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि वे मिस्र में दास थे।

व्यवस्थाविवरण 16:13

इस्राएलियों को अपने खलिहान और दाखमधु के कुण्ड से फसल इकट्ठा करने के बाद सात दिनों तक कौन सा पर्व मनाने का निर्देश दिया गया है?

उन्हें अपनी फसल इकट्ठा करने के बाद सात दिनों तक झोपड़ियों का पर्व मनाना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 16:16

किन तीनों पर्वों में इस्राएल के सब पुरूषों को यहोवा के सामने उस स्थान पर जिसे यहोवा चुन ले, उपस्थित होना चाहिए?

उन्हें अख़मीरी रोटी के पर्व, सप्ताहों के पर्व, और झोपड़ियों के पर्व पर उनके सामने उपस्थित होना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 16:17

प्रत्येक इस्राएली पुरुष को खाली हाथ आने के बदले यहोवा को क्या देना चाहिए?

प्रत्येक इस्राएली पुरुष को यहोवा को अपनी सामर्थ्य के अनुसार देना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 16:18

इस्राएली अपने न्यायी और सरदार को कहाँ पाएँगे?

प्रत्येक गोत्र में से न्यायी और सरदार को नियुक्त किया जाएगा ताकि वे लोगों का न्याय धार्मिकता से किया करें।

व्यवस्थाविवरण 16:19

न्यायी और सरदार को घूस लेकर न्याय करने या पक्षपात दिखाने के लिए क्यों मजबूर नहीं करना चाहिए?

घूस बुद्धिमानों की आँखों को अंधा कर देती है और धर्मियों की बातें पलट देती है।

व्यवस्थाविवरण 16:20

न्यायी और सरदार को न्याय का पालन करने से क्या लाभ होता है?

उन्हें केवल न्याय और धर्म का पालन करना चाहिए, ताकि वे जीवित रहें और उस देश को प्राप्त कर सकें जो यहोवा उन्हें दे रहे हैं।

व्यवस्थाविवरण 16:21–22

इस्राएलियों को अपने लिये क्या स्थापित नहीं करनी चाहिए?

उन्हें अशेरा, किसी प्रकार का स्तम्भ, या कोई पवित्र पत्थर स्तम्भ स्थापित नहीं करना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 17:1

इस्राएलियों को यहोवा को किसी भी दोष या खोट वाले बैल या भेड़ का बलिदान क्यों नहीं देना चाहिए?

यदि वे किसी दोषपूर्ण या खोटे पशु की बलि चढ़ाते हैं, तो यह यहोवा के समीप घृणित होगा।

व्यवस्थाविवरण 17:4

इस्राएलियों से क्या करने को कहा गया है यदि वे सुनें कि उनके नगरों में किसी पुरुष या स्त्री ने वह काम किया है जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है?

इस्राएलियों को यह सुनिश्चित करने के लिए भली भाँति पूछपाछ करनी चाहिए कि यह सत्य और निश्चित है या नहीं।

व्यवस्थाविवरण 17:5

इस्राएलियों को उस पुरुष या महिला के साथ क्या करना चाहिए जिन्होंने अन्य देवताओं की उपासना की है और उनके सामने दण्डवत् करने जैसा बुरा काम किया है?

इस्राएलियों को उन्हें ऐसा पथराव करना कि वह मर जाए।

व्यवस्थाविवरण 17:6

किसी व्यक्ति को प्राणदण्ड देने के लिए कितने साक्षी की आवश्यकता होती है?

किसी व्यक्ति को प्राणदण्ड देने के लिए दो या तीन साक्षी की आवश्यकता होती है।

व्यवस्थाविवरण 17:7

जब किसी व्यक्ति को पत्थर मारकर प्राणदण्ड दिया जाना हो, तो पहला पत्थर कौन फेंके?

साक्षियों के हाथ सबसे पहले पत्थर फेंकने के लिए उठने चाहिए, और उसके बाद इस्राएल के लोगों के हाथ।

व्यवस्थाविवरण 17:7 (#2)

इस्राएलियों को उस व्यक्ति को पथराव करके मारना क्यों चाहिए जिसने अन्य देवताओं की उपासना करने का दुष्ट कार्य किया है?

यह उनके बीच से बुराई को हटा देगा।

व्यवस्थाविवरण 17:9

यदि इस्राएलियों के पास कोई ऐसा मामला हो जिसका न्याय करना उनके लिए बहुत कठिन हो, तो उसका न्याय कौन करेगा?

उन्हें लेवीय याजकों के पास और उन दिनों के न्यायियों के पास जाकर पूछताछ करना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 17:12

इस्राएल से बुराई दूर करने के लिए किस मनुष्य को मरना होगा?

जो कोई भी अभिमान से कार्य करता है और याजक की नहीं सुनता, या न्यायी की नहीं सुनता, उसे मार डाला जाना चाहिए ताकि इस्राएल से बुराई को दूर किया जा सके।

व्यवस्थाविवरण 17:15

जब इस्राएली इस देश में रहेंगे तब किस को अपना राजा नियुक्त करेंगे?

इस्राएली अपने भाइयों में से किसी को चुनेंगे जिसे यहोवा चुनेंगे।

व्यवस्थाविवरण 17:16

इस्राएल का राजा अपने लिये घोड़े क्यों न बढ़ाए, और प्रजा को मिस्र में क्यों न लौटाए, कि राजा के पास बहुत से घोड़े हों?

उन्हें घोड़ों को नहीं बढ़ाना चाहिए और लोगों को मिस्र लौटने के लिए प्रेरित नहीं करना चाहिए क्योंकि यहोवा ने इस्राएलियों से कहा है कि वे फिर कभी उस मार्ग पर न लौटें।

व्यवस्थाविवरण 17:17

राजा से यह क्यों कहा गया है कि वह अपने लिए पत्नियाँ न बढ़ाए?

वे अपने लिए पत्नियों की संख्या नहीं बढ़ाएँ ताकि उनका हृदय यहोवा से पलट न जाए।

व्यवस्थाविवरण 17:18–19

राजा को अपने साथ क्या रखना चाहिए और अपने जीवन के सभी दिनों में क्या पढ़ने के लिए निर्देशित किया गया है, ताकि वे यहोवा का आदर करना सीख सकें, और इस व्यवस्था और इन विधियों की सारी बातों का पालन करना और मानना सीख सकें?

उन्हें अपने लिए इस व्यवस्था की एक प्रति लिखनी चाहिए, जो उनके पास रहेगी और उनके जीवन के सभी दिनों में उनके द्वारा पढ़ी जाएगी।

व्यवस्थाविवरण 17:20

राजा को व्यवस्था की पुस्तक अपने पास रखने का निर्देश क्यों दिया गया है?

उन्हें पुस्तक अपने पास रखना चाहिए जिससे वह अपने मन में घमण्ड करके अपने भाइयों को तुच्छ न जाने, और इन आज्ञाओं से न तो दाएँ मुड़ें और न बाएँ।

व्यवस्थाविवरण 18:1–2

लेवी याजकों को अपने निज भाग के रूप में यहोवा की भेंटें क्यों खानी होंगी?

लेवीय याजकों को भेंट खानी पड़ती थी क्योंकि उनके भाइयों के बीच उनका कोई भाग नहीं होता था।

व्यवस्थाविवरण 18:3–4

लोगों के बलिदानों से याजकों को क्या प्रदान किया जाना चाहिए था?

याजकों को बैल और भेड़ों के कंधे, दोनों गाल, पेट, अपनी पहली उपज का अन्न, नया दाखमधु, और टटका तेल, और भेड़ों का ऊन लोगों के बलिदानों से दिया जाना चाहिए था।

व्यवस्थाविवरण 18:5

याजकों को लोगों के बलिदानों से ये हिस्से क्यों प्राप्त होने चाहिए थे?

उन्हें ये हिस्से प्राप्त होने थे क्योंकि यहोवा ने उन्हें अपने नाम से सेवा टहल करने के लिए चुना था।

व्यवस्थाविवरण 18:6–7

लेवी कब यहोवा द्वारा चुने गए स्थान में सेवा कर सकते हैं?

जब कोई लेवीय इस्राएल के किसी भी नगर के द्वार से यहोवा की सेवा करने की लालसा के साथ बाहर आता है, तब वह यहोवा द्वारा चुने गए स्थान में सेवा कर सकता है।

व्यवस्थाविवरण 18:9–11

वहाँ की जातियों द्वारा अपनाएँ जाने वाले घिनौने काम क्या थे?

कुछ घिनौने कामों में उनके बच्चों को आग में होम करके चढ़ाना, भावी कहना, शुभ-अशुभ मुहूर्त्तों का मानना, टोन्हा या तांत्रिक का उपयोग करना और ओझों से पूछना, या भूत साधना शामिल था।

व्यवस्थाविवरण 18:12–14

यहोवा जातियों को देश से क्यों बाहर करेंगे?

यहोवा उन जातियों को देश से बाहर कर देंगे क्योंकि वे उन लोगों की सुनते हैं जो शुभ-अशुभ मुहूर्त्तों के माननेवाले और भावी कहनेवाले हैं।

व्यवस्थाविवरण 18:15

यहोवा ने लोगों में से किसे उत्पन्न करने का वचन दिया?

यहोवा ने वादा किया कि वह भविष्य में इस्राएल के लिए मूसा के समान एक नबी को उत्पन्न करेंगे।

व्यवस्थाविवरण 18:20

एक नबी की मृत्यु का कारण क्या हो सकता है?

यदि कोई नबी यहोवा के नाम में अभिमान से कोई ऐसा वचन कहे, जो यहोवा ने उसे बोलने की आज्ञा नहीं दी है, या वह पराए देवताओं के नाम से कुछ कहे, तो वह नबी मार डाला जाएगा।

व्यवस्थाविवरण 18:22

यदि यहोवा के नाम में की गई भविष्यवाणी पूरी नहीं होती है, तो इसका क्या अर्थ है?

यदि कोई भविष्यवाणी पूरी नहीं होती है, तो वह भविष्यवाणी यहोवा द्वारा नहीं कही गई है।

व्यवस्थाविवरण 19:1–3

यहोवा ने लोगों को देश के मध्य में तीन नगर चुनने का निर्देश क्यों दिया?

उन्होंने लोगों को निर्देश दिया कि वे तीन नगरों का चयन करें ताकि जो कोई भी किसी अन्य व्यक्ति की हत्या करता है, वह वहीं भाग जाए।

व्यवस्थाविवरण 19:4–5

यहोवा उस व्यक्ति के लिए क्या प्रावधान करते हैं जो अनजाने में अपने पड़ोसी की हत्या कर देता है, और पहले से उससे द्वेष नहीं रखता था?

यहोवा ने तीन शरण नगर प्रदान किए जिनमें लोग भागकर जीवित रह सकते थे।

व्यवस्थाविवरण 19:6–7

जो किसी अन्य को मारता है, उसे शरण नगर में क्यों भागना चाहिए?

उसे भाग जाना चाहिए ताकि ऐसा न हो कि मार्ग की लम्बाई के कारण खून का पलटा लेनेवाला अपने क्रोध के ज्वलन में उसका पीछा करके उसको जा पकड़े, और मार डाले।

व्यवस्थाविवरण 19:8–9

तीन और शरण नगर जोड़ने की शर्तें क्या होंगी?

यदि यहोवा उनकी सीमाओं का विस्तार करें, तो उन्हें तीन और शरण नगर जोड़ने होंगे।

व्यवस्थाविवरण 19:11–13

यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी से बैर रखता है, उसके लिए घात लगाता है, उसे घातक रूप से घायल करता है, और फिर शरण नगर में भाग जाता है, तो उसके लिए क्या होना चाहिए?

तो उसके नगर के पुरनिये किसी को भेजकर उसको वहाँ से मँगवाकर खून के पलटा लेनेवाले के हाथ में सौंप दें, कि वह मार डाला जाए।

व्यवस्थाविवरण 19:15

किसी मामले की पुष्टि के लिए कितने साक्षी आवश्यक होते हैं?

किसी मामले की पुष्टि के लिए दो या तीन साक्षियों के कहने से बात पक्की ठहरे।

व्यवस्थाविवरण 19:17–18

जब दो व्यक्तियों के बीच मुकद्दमा उठा हो तो क्या किया जाना चाहिए?

वे दोनों मनुष्य, जिनके बीच ऐसा मुकद्दमा उठा हो, यहोवा के सम्मुख, अर्थात् उन दिनों के याजकों और न्यायियों के सामने खड़े किए जाएँ; तब न्यायी भली भाँति पूछताछ करें, और यदि इस निर्णय पर पहुँचें कि वह झूठा साक्षी है, और अपने भाई के विरुद्ध झूठी साक्षी दी है।

व्यवस्थाविवरण 19:19

यदि किसी साक्षी की गवाही झूठी पाई जाती है, तो क्या किया जाना चाहिए?

यदि किसी साक्षी की गवाही झूठी पाई जाती है, तो उनके साथ वही करना चाहिए जो वे अपने भाई के साथ करना चाहते थे।

व्यवस्थाविवरण 20:1

इस्राएल के लोगों को अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध में जाते समय क्यों नहीं डरना चाहिए?

इस्राएल के लोगों को डरना नहीं चाहिए, क्योंकि उनका परमेश्वर यहोवा, जो उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया है, उनके साथ रहेंगे।

व्यवस्थाविवरण 20:2–4

जब इस्राएल के लोग युद्ध के निकट आते हैं, तो क्या होना चाहिए?

याजक को लोगों से कहना चाहिए और उन्हें बताना चाहिए कि डरने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यहोवा उनके साथ हैं और उनके लिए युद्ध करेंगे।

व्यवस्थाविवरण 20:5

यदि किसी व्यक्ति ने नया घर बनाया है और अभी तक उसका समर्पण नहीं किया है, तो उसे क्या करना चाहिए?

उसे अपने घर लौट जाना चाहिए ताकि वह युद्ध में न मरे और कोई अन्य पुरुष इसे समर्पित न कर लें।

व्यवस्थाविवरण 20:7

यदि किसी पुरुष ने किसी महिला से सगाई कर ली है और अभी तक उससे विवाह नहीं किया है, तो उसे क्या करना चाहिए?

उसे वापस आकर उससे विवाह करना चाहिए ताकि वह युद्ध में न मरे और कोई अन्य पुरुष उससे विवाह न कर ले।

व्यवस्थाविवरण 20:10–11

यदि किसी दूर स्थित नगर पर इस्राएल के आक्रमण के समय वहाँ के लोग संधि करने का प्रस्ताव स्वीकार कर लें तो क्या होगा?

नगर के सभी लोगों को इस्राएल के अधीन होकर उनके लिये बेगार करनेवाला ठहरना होगा।

व्यवस्थाविवरण 20:12–13

यदि कोई नगर संधि के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करता है और इसके बजाय इस्राएल के खिलाफ युद्ध करता है, तो क्या किया जाना चाहिए?

इस्राएल को उस पर हमला करना चाहिए और जब यहोवा इस्राएल को विजय दिलाएँ, तो उन्हें नगर के प्रत्येक पुरुष को तलवार से मार डालना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 20:16–18

इस्राएल के लोगों को उन नगरों में, जिसका अधिकारी यहोवा उनको ठहराने पर है, हर उस चीज़ को पूरी तरह से नष्ट क्यों करना चाहिए जो जीवित है?

उन्हें सब कुछ सत्यानाश करना होगा ताकि देश के लोग उन्हें यहोवा के विरुद्ध घृणित कार्य करना और पाप करना न सिखाएँ।

व्यवस्थाविवरण 20:19–20

इस्राएल को उन नगरों में, जिन पर उन्होंने आक्रमण किया है, वृक्षों के साथ क्या करना चाहिए?

इस्राएल को उन वृक्षों पर कुल्हाड़ी चलाकर उन्हें नाश न करना जो भोजन के लिए उपयोग किए जाते हैं, परन्तु जिन वृक्षों के विषय में इस्राएल यह जान ले कि इनके फल खाने के नहीं हैं, तो उनको काटकर नाश करना और उस नगर के विरुद्ध उस समय तक घेराबन्दी किए रहना जब तक वह इस्राएल के वश में न आ जाए।

व्यवस्थाविवरण 21:1–2

यदि किसी मारे हुए का शव किसी मैदान में पड़ा मिले और उसको किसने मार डाला है यह पता न चले, तो क्या किया जाना चाहिए?

पुरनिये और न्यायी को निकलकर उस शव के चारों ओर के एक-एक नगर की दूरी को नापना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 21:5

यहोवा इस्राएल के लोगों की उनके याजकों कहने के अनुसार कैसी प्रतिक्रिया चाहते थे?

यहोवा चाहते थे कि वे हर एक झगड़े और मारपीट के मुकद्दमे में उसके याजकों की सलाह को अंतिम निर्णय के रूप में स्वीकार करें।

व्यवस्थाविवरण 21:6–7

मारे गए मनुष्य के सबसे निकट के नगर के पुरनियों को कौन-सी विधि करनी चाहिए ताकि यह खून का दोष क्षमा किया जाए?

नगर के सब पुरनिए उस बछिया के ऊपर, जिसका गला तराई में तोड़ा गया हो, अपने-अपने हाथ धोकर कहें, "यह खून हमने नहीं किया, और न यह काम हमारी आँखों के सामने हुआ है।"

व्यवस्थाविवरण 21:10

मूसा ने इस्राएलियों से इस विषय में क्या कहा कि जब वे अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध के लिए जाएँ और यहोवा उन्हें उनके हाथ में कर दे, तो उन्हें क्या करना चाहिए?

उन्हें अपने शत्रुओं को बन्दी बनाकर ले जाने के लिए कहा गया था।

व्यवस्थाविवरण 21:11–12

एक इस्राएली पुरुष को उन स्त्रियों के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करनी चाहिए जो बन्दी बना ली गई थीं?

यदि कोई पुरुष एक सुन्दर स्त्री को देखे जिसे वह अपनी पत्नी बनाना चाहता हो, तो वह उसे अपने घर के भीतर ले आए जहाँ वह अपना सिर मुँड़ाएँ, नाखून कटाएँ।

व्यवस्थाविवरण 21:13

बन्दी स्त्री को अपने माता और पिता के लिए कितने दिनों तक विलाप करने की अनुमति थी?

वह अपने पिता और माता के लिए एक महीने तक विलाप करती रहे, इसके बाद वह उस पुरुष की पत्नी बने।

व्यवस्थाविवरण 21:14

यदि किसी इस्राएली पुरुष ने एक बन्दी को पत्नी के रूप में लिया है और वह उसे अच्छी न लगे, तो उसे उसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

उसे रुपये के लिए बेचने के बजाय उसे जाने देना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 21:15–17

यदि किसी पुरुष की दो पत्नियाँ हों, और वह उस पत्नी को अप्रिय जनता हो जिसने उसके जेठे पहिलौठा पुत्र जन्म दिया है, तो उसे अपनी सम्पत्ति अपने वारिसों में कैसे बाँटनी चाहिए?

इस पुरुष को उस पत्नी के जेठे पुत्र को, जिससे वह अप्रिय जनता है, उसकी सभी सम्पत्ति का दो भाग देकर स्वीकार करना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 21:18

यदि बेटा अपने पिता या माता की बात नहीं मानता है, तो उसे अपने हठीले और विद्रोही बेटे को किसके पास ले जाना चाहिए?

पुरुष और उसकी पत्नी को अपने बेटे को अपने नगर से बाहर फाटक के निकट नगर के पुरनियों के पास ले जाना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 21:20

विद्रोही पुत्र के पिता और माता को उनके नगर के पुरनियों से क्या कहना चाहिए?

विद्रोही पुत्र के पिता और माता को पुरनियों से कहना चाहिए, "हमारा यह बेटा हठीला और दंगैत है, यह हमारी नहीं सुनता; यह उड़ाऊ और पियक्कड़ है।"

व्यवस्थाविवरण 21:21

नगर के सब पुरुषों को उस पुत्र को पथराव करके क्यों मार डालना चाहिए?

उन्हें उस पुत्र को मृत्यु तक पथराव करना चाहिए ताकि अपने बीच से बुराई को मिटा दें, और समस्त इस्राएल यह सुनकर भय खाए।

व्यवस्थाविवरण 21:22–23

यदि कोई ऐसा पाप करता है जिसकी सजा मृत्यु दण्ड है और उसे वृक्ष पर लटकाया जाता है, तो क्या किया जाना चाहिए?

पुरुष का शरीर पूरी रात वृक्ष पर नहीं रहना चाहिए, बल्कि उसी दिन मिट्टी देना चाहिए ताकि भूमि अशुद्ध न हो।

व्यवस्थाविवरण 22:2

जब इस्राएल के लोग अपने साथी इस्राएली के किसी पशु को भटकते हुए देखें, तो मूसा ने उन्हें क्या करने के लिए कहा?

उन्हें पशु को अपने घर नहीं लाना चाहिए, बल्कि उसे अपने इस्राएली भाई के पास वापस ले जाना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 22:4

जब इस्राएल के लोग मार्ग में किसी इस्राएली भाई का गदहे या बैल गिरा हुआ देखें, तो मूसा ने उन्हें क्या करने के लिए कहा?

उन्हें अपने भाई की सहायता करनी चाहिए ताकि वे उसे फिर से उठा सकें।

व्यवस्थाविवरण 22:5

यहोवा को कौन सा आचरण घृणित लगता है?

जब कोई स्त्री पुरुषों के कपड़े पहनती हैं या कोई पुरुष स्त्रियों के कपड़े पहनता है तो यहोवा को यह घृणित लगता है।

व्यवस्थाविवरण 22:6–7

यदि इस्राएल के लोग एक चिड़िया के घोंसले में उसकी माँ को उसके बच्चों के साथ या अण्डों पर बैठे हुए पाते हैं, तो उन्हें क्या करना चाहिए?

उन्हें माँ को जाने देना चाहिए, परन्तु बच्चों को वे अपने लिए ले सकते हैं।

व्यवस्थाविवरण 22:8

जब एक इस्राएली एक घर बनाता था, तो क्या आवश्यक होता था?

यह आवश्यक था कि वह छत पर आड़ के लिये मुण्डेर बनाएं ताकि यदि कोई वहाँ से गिर जाए तो उसके घर पर खून का दोष न आए।

व्यवस्थाविवरण 22:9

इस्राएलियों को अपनी दाख की बारियों में दो प्रकार के बीज न बोने का निर्देश क्यों दिया गया था?

इस्राएलियों को दो प्रकार के बीज बोने की अनुमति नहीं थी, ऐसा न हो कि उसकी सारी उपज अपवित्र ठहरें।

व्यवस्थाविवरण 22:12

अपने ओढ़ने के चारों ओर की कोर पर क्या लगाना चाहिए?

अपने ओढ़ने के चारों ओर की कोर पर झालर लगानी चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 22:18–19

यदि किसी पुरुष ने अपनी पत्नी के खिलाफ झूठा आरोप लगाया है, तो क्या किया जाना चाहिए?

नगर के पुरनिये उसे ताड़ना देंगे और उस पर सौ शेकेल चाँदी का दण्ड भी लगाएँगे, जो पत्नी के पिता को दिया जाएगा, और वह पुरुष अपनी पत्नी को कभी अलग नहीं कर सकेगा।

व्यवस्थाविवरण 22:20–21

यदि पत्नी के कुँवारीपन के चिन्ह पाए न जाएँ, तो क्या किया जाना चाहिए?

यदि उसके कुँवारीपन के चिन्ह पाए न जाएँ, तो उसे बाहर लाकर पथराव करके मार डालना चाहिए क्योंकि उसने एक वेश्या का काम किया है।

व्यवस्थाविवरण 22:22

यदि कोई पुरुष दूसरे पुरुष की पत्नी के साथ सोता हुआ पाया जाता है, तो इस स्थिति में क्या किया जाना चाहिए?

बुराई को समाप्त करने के लिए पुरुष और स्त्री दोनों मार डाले जाए।

व्यवस्थाविवरण 22:23–24

यदि किसी कुँवारी कन्या, जिसकी सगाई किसी पुरुष से हुई हो, और कोई दूसरा पुरुष उसे नगर में पाकर उससे कुकर्म करे, तो इस्राएलियों को दोनों को पथराव करके मार डालने की आज्ञा क्यों दी गई है?

उन्हें दोनों को पथराव करके मारने की आज्ञा दी गई है क्योंकि कन्या नगर में रहते हुए भी नहीं चिल्लाई और पुरुष ने पड़ोसी की स्त्री का अपमान किया है।

व्यवस्थाविवरण 22:25–27

यदि कोई पुरुष मैदान में उस कन्या के साथ बरबस कुकर्म करे, तो क्या किया जाना चाहिए?

यदि यह किसी मैदान में होता है, तो पुरुष को मार डालना चाहिए, परन्तु कन्या के साथ कुछ नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि उसे मैदान में पाया गया था और वहाँ उसे बचाने वाला कोई नहीं था।

व्यवस्थाविवरण 22:28–29

यदि कोई पुरुष एक कुँवारी कन्या के साथ कुकर्म करे, जिसके ब्याह की बात न लगी हो और वे पकड़े जाएँ, तो क्या होना चाहिए?

तब उस पुरुष को कन्या के पिता को पचास शेकेल चाँदी देनी होगी और उस कन्या को अपनी पत्नी बनाना होगा, तथा वह जीवन भर उसे त्याग न सकेगा।

व्यवस्थाविवरण 22:30

क्यों एक पुरुष को सौतेली माता को अपनी पत्नी के रूप में नहीं लेना चाहिए?

किसी पुरुष को सौतेली माता को अपनी नहीं बनाना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से वह अपने पिता के वैवाहिक अधिकार छीन लेगा।

व्यवस्थाविवरण 23:1–2

यहोवा की सभा में प्रवेश की अनुमति किसे नहीं होगी?

कोई भी पुरुष जिसके अण्ड कुचले या लिंग काट दिए गए हों या कोई कुकर्म से जन्मा हुआ यहोवा की सभा में प्रवेश नहीं कर सकता।

व्यवस्थाविवरण 23:3–4

अम्मोनी और मोआबी यहोवा की सभा में प्रवेश क्यों नहीं कर सकते हैं?

वे सभा में प्रवेश नहीं कर सकते क्योंकि उन्होंने इस्राएलियों से अन्न जल लेकर मार्ग में भेंट नहीं की जब वे मिस्र से बाहर आए थे और उन्होंने बिलाम को उन्हें श्राप देने के लिये दक्षिणा दी थी।

व्यवस्थाविवरण 23:5

कौन से प्रमाण यह दर्शाते हैं कि यहोवा ने बिलाम की बात नहीं मानी?

यहोवा ने बिलाम के श्राप को इस्राएल के लिए आशीष में बदल दिया।

व्यवस्थाविवरण 23:7–8

एदोमियों और मिस्रियों को यहोवा की सभा में प्रवेश की अनुमति क्यों थी?

एक एदोमी को सभा में रहने की अनुमति थी क्योंकि वह एक साथी इस्राएली थे और एक मिस्री को सभा में रहने की अनुमति थी क्योंकि इस्राएली उनके देश में परदेशी होकर रहा था।

व्यवस्थाविवरण 23:9–11

इस्राएली सेना का एक पुरुष जो रात में हुई घटना के कारण अशुद्ध हो गया हो, वह फिर से शुद्ध कैसे हो सकता था ताकि वह छावनी के भीतर आ सके?

वह संध्या से कुछ पहले वह स्नान करे और फिर छावनी में आए।

व्यवस्थाविवरण 23:12–14

यहोवा ने इस्राएल के लोगों को कहाँ और कैसे शौच करना है, इसके बारे में निर्देश क्यों दिए?

यहोवा छावनी के मध्य में चल रहे थे, इसलिए छावनी पवित्र होनी चाहिए ताकि यहोवा कोई अशुद्ध वस्तु न देखें और उनसे फिर न जाए।

व्यवस्थाविवरण 23:15–16

दासों के बारे में यहोवा द्वारा दिए गए निर्देश असामान्य कैसे थे?

जो दास अपने स्वामी से भागकर आए, उसे वापस नहीं भेजा जाना चाहिए, बल्कि उसे किसी भी नगर में रहने की अनुमति दी जानी चाहिए थी जिसे वह चुनता।

व्यवस्थाविवरण 23:17–18

यहोवा ने इस्राएलियों के बीच किसी देवदासी या समलैंगिक को क्यों अनुमति नहीं दी और न ही उनकी कमाई को अपने घर में मन्नत पूरी करने के लिए के रूप में इस्तेमाल करने की अनुमति दी?

यहोवा वेश्याओं या समलैंगिकों के अनुचित आचरण से सम्बन्धित किसी भी वास्तु से घृणा करते थे।

व्यवस्थाविवरण 23:19–20

जब ऋण देने की बात इस्राएलियों के बजाय परदेशियों से जुड़ी होती, तो नीति किस तरह अलग थी?

उन्हें अपने साथी इस्राएलियों को ब्याज पर ऋण देने की अनुमति नहीं थी, परन्तु परदेशियों को ब्याज पर ऋण देने की अनुमति थी।

व्यवस्थाविवरण 23:21–23

एक इस्राएली के लिए यहोवा से की गई मन्नत को पूरा करना कितना महत्वपूर्ण था?

एक इस्राएली को यहोवा से की गई मन्नत को पूरा करने में देरी नहीं करनी चाहिए थी, बल्कि उसे अपने मुँह से जो उन्होंने स्वतंत्र रूप से मन्नत मणि थी, उसे पूरा करना चाहिए था ताकि वे यहोवा के खिलाफ पाप न करें।

व्यवस्थाविवरण 23:24–25

यहोवा के निर्देश कितने उदार थे कि इस्राएली अपने पड़ोसी की दाख की बारी और खेतों से क्या खा सकते थे?

वे अपने पड़ोसी की दाख की बारी से भरपेट दाख खा सकते थे, परन्तु अपने पात्र में कुछ नहीं रख सकते थे। वे अपने पड़ोसी के खेत से अनाज के बालों को तोड़ सकते थे, परन्तु किसी दूसरे के खड़े खेत पर हँसुआ नहीं लगा सकते थे।

व्यवस्थाविवरण 24:1–2

यहोवा किसी पुरुष के लिए अपनी पत्नी को तलाक देना कैसे संभव बनाते हैं?

यदि कोई पुरुष अपनी पत्नी में कुछ लज्जा की बात पाता है, तो वह उसे त्यागपत्र लिखकर, उसे उसके हाथ में दे सकता है, और उसे अपने घर से बाहर भेज सकता है, जहाँ वह जाकर किसी अन्य पुरुष की पत्नी बन सकती है।

व्यवस्थाविवरण 24:3–4

यदि दूसरा पति उसे त्यागपत्र लिखकर घर से निकाल देता है या वह मर जाता है, तो यहोवा क्या अनुमति नहीं देते?

यहोवा पहले पति को, जिसने उसे भेज दिया हो, फिर से अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करने की अनुमति नहीं देते।

व्यवस्थाविवरण 24:5

एक पुरुष के लिए नई पत्नी लेने के क्या फायदे थे?

उन्हें युद्ध में जाने की आवश्यकता नहीं है और न किसी काम का भार उस पर डाला जाए, वह वर्ष भर अपने घर में स्वतंत्रता से रहकर अपनी ब्याही हुई स्त्री को प्रसन्न करता रहे।

व्यवस्थाविवरण 24:6

क्यों किसी मनुष्य को चक्की या ऊपर के पाट को बन्धक के रूप में लेने की अनुमति नहीं थी?

किसी पुरुष को उन्हें लेने की अनुमति नहीं थी, क्योंकि वह एक पुरुष की जीविका थी।

व्यवस्थाविवरण 24:7

वे कौन सी परिस्थितियाँ हैं जब एक पुरुष को चोर घोषित किया जाएगा और उसे मार डाला जाएगा?

यदि कोई पुरुष अपने किसी इस्राएली भाई को चुराता हुआ पकड़ा जाए और उसे गुलाम के रूप में रखे या बेच दे, तो उसे चोर घोषित किया जाएगा और मार डाला जाएगा।

व्यवस्थाविवरण 24:8–9

यहोवा ने मूसा के माध्यम से इस्राएल के लोगों को कोढ़ के बारे में कौन सी चेतावनी दी?

मूसा ने इस्राएल के लोगों से कहा कि वे यहोवा द्वारा याजकों और लेवियों को दी गई कोढ़ की किसी भी बीमारी के बारे में हर निर्देश को ध्यानपूर्वक देखें और उसका पालन करें।

व्यवस्थाविवरण 24:10–11

पड़ोसी को ऋण देते समय क्या प्रतिबन्ध लगाए गए थे?

जब पड़ोसी को ऋण दिया गया था, तो उन्हें बन्धक की वस्तु लेने के लिए घर में नहीं जाना था, बल्कि बाहर खड़े होकर उस पुरुष का इंतजार करना था जिसने ऋण लिया था ताकि वह बन्धक की वस्तु बाहर लाए।

व्यवस्थाविवरण 24:12–13

यदि बन्धक देने वाला मनुष्य कंगाल हो, तो क्या होना चाहिए?

यदि वह मनुष्य कंगाल हो, तो जो व्यक्ति उसे ऋण देता है, उसे बन्धक अपने पास रखकर नहीं सोना चाहिए। बल्कि, सूर्य अस्त होते-होते उसे वह बन्धक अवश्य फेर देना चाहिए इसलिए कि वह अपना ओढ़ना ओढ़कर सो सके।

व्यवस्थाविवरण 24:14–15

इस्राएल के लोगों को क्या करना चाहिए ताकि वे दीन और कंगाल मजदूरी के सेवक पर अत्याचार न करें?

उन्हें उसे उसकी मज़दूरी हर दिन देनी चाहिए क्योंकि वह दीन है और उसी पर निर्भर रहता है।

व्यवस्थाविवरण 24:16

यहोवा ने यह कैसे स्पष्ट किया कि हर मनुष्य अपने पापों के लिए स्वयं जिम्मेदार है?

यहोवा ने इस्राएल के लोगों से कहा कि माता-पिता को उनके बच्चों के पापों के लिए मृत्यु दंड नहीं दिया जाना चाहिए और बच्चों को उनके माता-पिता के पापों के लिए मृत्यु दंड नहीं दिया जाना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 24:17–18

इस्राएलियों को मिस्र में उनके दासत्व के समय और यहोवा ने उन्हें वहाँ से कैसे छुड़ाया, इसके बारे में क्यों स्मरण दिलाया गया?

उन्हें यह स्मरण दिलाया गया ताकि वे परदेशी मनुष्य या अनाथ बालक के न्याय को हड़प न लें, और विधवा विधवा के कपड़े को बन्धक के रूप में न लें।

व्यवस्थाविवरण 24:19–20

जब इस्राएल के लोग अपनी फसल काटते थे या अपने जैतून को हिलाते थे, तो उन्हें क्या करने का निर्देश दिया गया था?

जब इस्राएल के लोग अपने खेत की फसल काटते थे, तो उन्हें खेत में भूले हुए पूले के लिए वापस नहीं जाना था या अपने जैतून को दूसरी बार नहीं हिलाना था, बल्कि उन्हें परदेशी, अनाथ और विधवा स्त्रियों के लिए छोड़ देना था।

व्यवस्थाविवरण 25:1

एक न्यायी दो मनुष्यों के बीच विवाद को कैसे सुलझाएंगे?

वह निर्दोष को निर्दोष और दोषी को दोषी ठहराएँ।

व्यवस्थाविवरण 25:3

न्यायी दोषी मनुष्य को मिलने वाली मार की संख्या को क्यों सीमित करे?

वह आज्ञा देगा कि मार चालीस कोड़े से अधिक न हो, ताकि दोषी तुच्छ न ठहरे।

व्यवस्थाविवरण 25:5–6

यहोवा ने कौन-सा उपाय किया ताकि इस्राएल से किसी पुरुष का नाम मिट न जाए?

यदि कोई भाई निपुत्र मर जाए, तो उसके भाई को मरे हुए की विधवा को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करना चाहिए ताकि जो पहला बेटा हो, वह मृतक भाई के नाम को आगे बढ़ा सके।

व्यवस्थाविवरण 25:9–10

यदि कोई पुरुष अपने भाई की पत्नी को लेना न चाहे, तो यहोवा ने इस्राएलियों के लिए क्या दण्ड ठहराया था?

भाई की पत्नी उन वृद्ध लोगों के सामने उसके पास जाकर उसके पाँव से जूती उतारे, और उसके मुँह पर थूक दे; और कहे, 'जो पुरुष अपने भाई के वंश को चलाना न चाहे उससे इसी प्रकार व्यवहार किया जाएगा

व्यवस्थाविवरण 25:11–12

किस कारण से किसी की पत्नी का एक हाथ काट दिया जाए?

यदि दो पुरुष आपस में मारपीट करते हों, और उनमें से एक की पत्नी अपने पति को मारनेवाले के गुप्त अंग को पकड़े, तो उसके हाथ को काट दिया जाना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 25:15–16

यहोवा के लिए किस प्रकार का काम घृणित है?

जब किसी मनुष्य के पास मापने के लिए एक बड़ा और एक छोटा बटखरा होता है, बजाय पूरे-पूरे नपुए और धर्म के नपुए के, तो यह यहोवा की दृष्टि में घृणित है।

व्यवस्थाविवरण 25:17–19

इस्राएलियों को अमालेक की स्मृति को धरती पर से क्यों मिटा देना चाहिए?

जब इस्राएल मिस्र से निकलते समय मार्ग में अमालेक से मिला तो उसने परमेश्वर का आदर नहीं किया और पीछे निर्बल लोगों पर आक्रमण किया।

व्यवस्थाविवरण 26:1–2

जब इस्राएल के लोग उस भूमि को प्राप्त करें जो यहोवा ने उन्हें दी है, तो उन्हें क्या करना चाहिए?

इस्राएल के लोगों को भूमि की सभी फसलों में से कुछ पहले फल एक टोकरी में लेकर उस स्थान पर जाना चाहिए जिसे यहोवा ने अपने निवास स्थान के रूप में चुना है।

व्यवस्थाविवरण 26:3

जब इस्राएल के लोग याजक को टोकरी दे, तो उन्हें याजक से क्या कहना था?

इस्राएल के लोग कहें, "मैं आज हमारे परमेश्वर यहोवा के सामने स्वीकार करता हूँ, कि यहोवा ने हम लोगों को जिस देश के देने की हमारे पूर्वजों से शपथ खाई थी उसमें मैं आ गया हूँ।"

व्यवस्थाविवरण 26:5

इस्राएलियों को क्या कहना चाहिए कि उनका मूलपुरुष कौन था?

इस्राएलियों को कहना था कि उनका मूलपुरुष एक भटकता हुआ अरामी था।

व्यवस्थाविवरण 26:6

जब इस्राएली मिस्र में थे, तो मिस्रियों ने उनके साथ कैसा बर्ताव किया?

उन्होंने इस्राएलियों के साथ बुरा बर्ताव किया और उन्हें दुःख दिया, उन्हें दासों के रूप में काम करने के लिए मजबूर किया।

व्यवस्थाविवरण 26:8–9

यहोवा ने इस्राएलियों को मिस्र से कैसे बाहर निकाला?

उसने उन्हें बलवन्त हाथ से, अपनी बढ़ाई हुई भुजा से, अति भयानक चिन्ह, चमत्कार और अद्भुत कामों के साथ बाहर निकाला।

व्यवस्थाविवरण 26:10–11

यहोवा के सामने पहली उपज रखने का उद्देश्य क्या था?

उद्देश्य यहोवा को दण्डवत् करना और उन अच्छे पदार्थों में आनन्दित होना ,जो उसने इस्राएल, उनके घराने, लेवी और उनके बीच रहने वाले परदेशियों को दिए हैं।

व्यवस्थाविवरण 26:12

इस्राएलियों को अपनी फसल का सारा दशमांश देने के बाद क्या करना था?

इस्राएल के लोगों को इसे लेवियों, परदेशियों, अनाथों और विधवा स्त्रियों को देना था ताकि वे खा सकें और तृप्त हो सकें।

व्यवस्थाविवरण 26:15

इस्राएल के लोग यहोवा से क्या चाहते हैं कि वह उनके लिए करें?

इस्राएल के लोग चाहते हैं कि यहोवा स्वर्ग से नीचे देखें और उन्हें उस भूमि में आशीष दें जो उन्होंने उन्हें दी है।

व्यवस्थाविवरण 26:16

यहोवा इस्राएल के लोगों को क्या करने का निर्देश दे रहे हैं?

वह इस्राएल के लोगों को अपने विधियों और नियमों का सारे मन और सारे प्राण से चौकसी करने का निर्देश दे रहे हैं।

व्यवस्थाविवरण 26:17

इस्राएल के लोगों ने यहोवा को अपना परमेश्वर मानकर क्या वचन दिया है?

उन्होंने वचन दिया है कि यहोवा उनके परमेश्वर हैं और वे उनके बताए हुए मार्गों पर चलेंगे, उनकी विधियों, आज्ञाओं, और नियमों को माना करेंगे, और उनकी सुनेंगे।

व्यवस्थाविवरण 26:18–19

यहोवा ने इस्राएल के लोगों को क्या माना है?

यहोवा ने माना है कि इस्राएल उनकी निज प्रजा है, और वह उन्हें प्रशंसा, नाम और शोभा के विषय में उन्हें सब जातियों से अधिक प्रतिष्ठित करेंगे, ताकि वे उसके लिए पवित्र प्रजा बना रहे।

व्यवस्थाविवरण 27:1

मूसा और इस्राएल के वृद्ध लोगों ने इस्राएल के लोगों को क्या पालन करने की आज्ञा दी?

मूसा और इस्राएल के वृद्ध लोगों ने लोगों से कहा कि वे उन सभी आज्ञाओं को माना करें जो मूसा ने उस दिन उन्हें दी थीं।

व्यवस्थाविवरण 27:4

यहोवा जो देश उन्हें देगा, उसमें यरदन पार करने के बाद इस्राएलियों को क्या करना था?

उन्हें कुछ बड़े पत्थर खड़े करने थे, उन पर चूना पोतना था और उन पर व्यवस्था के सारे वचन लिखने थे।

व्यवस्थाविवरण 27:5

इस्राएल के लोगों को एबाल पहाड़ पर क्या बनाना था?

इस्राएल के लोगों को यहोवा के लिए पत्थरों की एक वेदी बनानी थी, बिना लोहे के औजारों का उपयोग किए, ताकि वे उस पर होमबलि चढ़ा सकें।

व्यवस्थाविवरण 27:8

इस्राएल के लोगों को उन पत्थरों पर क्या लिखवाना था जिन पर उन्होंने चूना पोता था?

उन्हें उन पत्थरों पर इस व्यवस्था के सब वचनों को स्पष्ट रीति से लिखवाने थे।

व्यवस्थाविवरण 27:9–10

उस दिन इस्राएलियों के लिए यहोवा की बात मानना और उनकी आज्ञा और विधि का पालन करना क्यों महत्वपूर्ण था?

यह महत्वपूर्ण था क्योंकि उस दिन वे यहोवा की प्रजा हो गए।

व्यवस्थाविवरण 27:11–12

इस्राएल के छः गोत्रों को गिरिज्जीम पर्वत पर खड़े होने की आज्ञा क्यों दी गई थी?

मूसा ने लोगों से कहा कि इस्राएल के छह गोत्रों को गिरिज्जीम पर्वत पर खड़े होकर लोगों को आशीर्वाद सुनाना होगा।

व्यवस्थाविवरण 27:13

इस्राएल के छः गोत्र को एबाल पहाड़ पर खड़े होने की आज्ञा क्यों दी गई थी?

इस्राएल के छः गोत्रो को एबाल पहाड़ पर खड़ा होने की आज्ञा दी गई थी ताकि वे शाप श्राप सुना सके।

व्यवस्थाविवरण 27:15

यहोवा किस चीज़ से घृणा करता है?

यहोवा के लिए घृणित बातों में से एक है किसी कारीगर से खुदवाकर या ढलवा के बनाई हुई मूर्ति, जिसे वह निराले स्थान में स्थापन करता है।

व्यवस्थाविवरण 27:20

यदि कोई पुरुष अपनी सौतेली माता से कुकर्म करे, तो वह श्रापित क्यों ठहरता है?

यदि कोई पुरुष अपनी सौतेली माता से कुकर्म करे, तो वह श्रापित होता है, क्योंकि वह अपने पिता का ओढ़ना उघाड़ता है।

व्यवस्थाविवरण 27:24–25

लेवियों ने क्या कहा कि उस मनुष्य के साथ क्या होगा जो जो किसी को छिपकर मारे या जो निर्दोष जन के मार डालने के लिये घुस ले?

वह पुरुष श्रापित हो।

व्यवस्थाविवरण 27:26

लेवियों ने ऐसा क्यों कहा कि मनुष्य को इस व्यवस्था के वचनों को मानकर पूरा करना चाहिए?

मनुष्य को इस व्यवस्था के वचनों को मानकर पूरा करना चाहिए ताकि वह श्रापित न ठहरे।

व्यवस्थाविवरण 28:1–2

यहोवा से आशीष पाने और पृथ्वी की सब जातियों से श्रेष्ठ होने के लिए इस्राएल के लोगों को क्या करना था?

इस्राएल के लोगों को चित्त लगाकर उनकी सुनने और उनकी सब आज्ञाओं का पालन करने की आवश्यकता थी।

व्यवस्थाविवरण 28:7

यदि इस्राएल के लोग उनकी आज्ञाओं का पालन करे तो यहोवा उनके लिए क्या करेंगे?

यहोवा उनके शत्रुओं को उनके सामने पराजित करेंगे।

व्यवस्थाविवरण 28:9

यदि वे उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे तो यहोवा इस्राएल के लोगों को क्या बनाएंगे?

वह उन्हें अपनी पवित्र प्रजा करके स्थिर रखेंगे।

व्यवस्थाविवरण 28:12

यदि इस्राएल के लोग उनकी आज्ञाओं का पालन करेंगे, तो यहोवा उनके लिए क्या खोलेंगे?

यहोवा उनके लिए अपने आकाशरूपी उत्तम भण्डार को खोलेंगे ताकि उनकी भूमि पर समय पर मेंह बरसाया करें, और उनके सारे कामों पर आशीष दें।

व्यवस्थाविवरण 28:15

यदि इस्राएल के लोग यहोवा की बात नहीं सुनेंगे और उनकी सारी आज्ञाओं का पालन नहीं करेंगे तो उनका क्या होगा?

सब श्राप उन पर पर आ पड़ेंगे।

व्यवस्थाविवरण 28:23

यदि इस्राएली आज्ञाओं का पालन नहीं करेंगे तो आकाश और भूमि उनके लिए क्या बन जायेंगे?

आकाश पीतल जैसा कठोर होगा और पृथ्वी लोहे जैसी सख्त होगी।

व्यवस्थाविवरण 28:25

यदि इस्राएली आज्ञाओं का पालन न करें, तो जब वे अपने शत्रुओं से लड़ेंगे, तब उनके साथ क्या होगा?

वे अपने शत्रुओं के सामने पराजित होंगे, और उनके सामने सात मार्गों से भागेंगे।

व्यवस्थाविवरण 28:27–28

यदि इस्राएली आज्ञा उल्लंघन करें, तो यहोवा उन्हें किससे दंडित करेगा?

वह उनको फोड़े, बवासीर, दाद, और खुजली से, और साथ ही पागलपन, अंधापन और मानसिक भ्रम से दंडित करेंगे।

व्यवस्थाविवरण 28:30

यदि किसी इस्राएली की किसी स्त्री से ब्याह की बात लगा हो, या एक घर या दाख की बारी बनाता हो, तो क्या होगा?

दूसरा पुरुष उसको भ्रष्ट करेगा, न ही घर में बसने पाएगा, और न ही दाख की बारी के फल खाने पाएगा।

व्यवस्थाविवरण 28:32

इस्राएलियों के पुत्रों और पुत्रियों का भविष्य क्या होगा?

उनके बेटे-बेटियाँ दूसरे देश के लोगों के हाथ लग जाएँगे, परन्तु उनका कुछ बस न चलेगा।

व्यवस्थाविवरण 28:37

इस्राएल के लोग सब जातियों के मध्य क्या समझे जाएंगे?

वे चकित होने का, और दृष्टान्त और श्राप का कारण समझे जाएंगे।

व्यवस्थाविवरण 28:38–39

इस्राएल के लोगों की अवज्ञा उनके द्वारा बोई गई फसलों को कैसे प्रभावित करेगी?

वे बीज तो बहुत सा ले जाएगे और दाख की बारियाँ लगाएंगे, पर अपने परिश्रम का फल नहीं खा पाएंगे क्योंकि कीड़े और टिड्डियाँ उसे नष्ट कर देंगी।

व्यवस्थाविवरण 28:43–44

परदेशी इस्राएल के लोगों से अधिक महत्वपूर्ण क्यों होंगे?

परदेशी उन्हें उधार देंगे और वे बढ़ते जाएंगे, जबकि इस्राएल के लोग उधार नहीं दे पाएंगे और पूँछ ठहरेंगे।

व्यवस्थाविवरण 28:45–46

यदि इस्राएल के लोग यहोवा की आज्ञाओं और विधियों को न सुनें, तो क्या होगा?

सब श्राप उन पर आ पड़ेंगे, और उनके पीछे पड़े रहेंगे, और उनको पकड़ेंगे, और अन्त में वे नष्ट हो जाएँगे।

व्यवस्थाविवरण 28:47–48

इस्राएल के लोगों को यहोवा के शत्रुओं की सेवा क्यों करनी पड़ेगी?

वे यहोवा के शत्रुओं की सेवा करेंगे क्योंकि बहुतायत होने पर भी उन्होंने आनन्द और प्रसन्नता के साथ अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा नहीं की।

व्यवस्थाविवरण 28:49–51

मूसा ने इस्राएल के लोगों के बारे में क्या भविष्यवाणी की थी?

यहोवा उनके विरुद्ध एक दूर से ऐसी जाति को लाएगा जो न बूढ़ों का आदर करेगी और न ही बालकों का, और वह उनके तथा उनके पशुओं का सारा उपज खा जाएँगे।

व्यवस्थाविवरण 28:54–55

नगर की घेराबंदी के समय उनमें से जो पुरुष कोमल और अति सुकुमार है, वह अपने भाई या अपनी प्राणप्रिय या अपने बच्चों को क्या नहीं देगा?

वह उनमें से किसी को भी अपने बालकों के माँस नहीं देगा, जिसे वह खाने वाला है।

व्यवस्थाविवरण 28:56–57

नगर की घेराबंदी के समय, स्त्री अपनी खेरी, वरन् अपने जने हुए बच्चों को, जिन्हें वह जन्म देगी, क्या करेगी?

नगर की घेराबंदी के दौरान एक स्त्री अपने जने हुए बच्चों को और उन बच्चों को खाएगी जिन्हें उसने जन्माया है।

व्यवस्थाविवरण 28:59

यदि इस्राएली व्यवस्था की पुस्तक के वचनों को मानकर यहोवा के नाम का आदर न करें, तो क्या होगा?

वे भयानक-भयानक दण्ड औरबहुत दिन रहनेवाले रोग का सामना करेंगे।

व्यवस्थाविवरण 28:62

यहोवा के दण्ड देने के बाद इस्राएल में कितने मनुष्य बचे रहेंगे?

वे संख्या में थोड़े रह जाएँगे और पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक तितर-बितर कर दिए जाएँगे।

व्यवस्थाविवरण 28:65

जब इस्राएली उन जातियों के बीच तितर-बितर कर दिए जाएँगे, तो क्या उन्हें चैन मिलेगा?

उन्हें कभी चैन नहीं मिलेगा, और न तेरे पाँव को ठिकाना मिलेगा।

व्यवस्थाविवरण 29:1

यहोवा ने किनके साथ एक वाचा की?

यहोवा ने मोआब के देश में इस्राएल के साथ एक वाचा बांधी।

व्यवस्थाविवरण 29:1

यहोवा ने इस्राएल के लोगों के साथ कौन-सी प्राचीन वाचा बाँधी थी?

यहोवा ने पहले होरेब में इस्राएलियों के साथ एक वाचा बाँधी थी।

व्यवस्थाविवरण 29:2

मूसा ने इस्राएल के सब लोगों को किस बात की याद दिलाई?

मूसा ने इस्राएल के सब लोगों को याद दिलाया कि यहोवा ने मिस्र देश में फ़िरौन, उसके सब कर्मचारियों और और उसके सारे देश से क्या-क्या किया था।

व्यवस्थाविवरण 29:4

मूसा ने क्यों कहा कि इस्राएलियों को उन बड़े कष्टों, चिह्नों और महान अद्भुत कामों की याद दिलाई जानी चाहिए जिन्हें उनकी आँखों ने देखा था?

मूसा ने कहा कि आज तक यहोवा ने उन्हें समझने के लिए बुद्धि, और न देखने की आँखें, और न सुनने के कान दिए हैं।

व्यवस्थाविवरण 29:5–6

यहोवा ने इस्राएल को चालीस वर्ष तक जंगल में क्यों चलाया, जहाँ उनके वस्त्र और जूतियाँ पुराने नहीं हुए और उन्होंने न तो कोई रोटी खाई और न ही दाखमधु या मदिरा पिने पाए?

उन्होंने ये बातें इसलिए कीं ताकि वे जान सकें कि यहोवा ही उनका परमेश्वर है।

व्यवस्थाविवरण 29:9

इस्राएल को हर चीज में सफल होने के लिए निर्देशों का पालन कैसे करना था?

उन्हें इस वाचा की बातों का पालन करना था और उन पर चलना आवश्यक था ताकि वे जो कुछ भी करें उसमें सफल हों।

व्यवस्थाविवरण 29:10–11

सभी इस्राएली किसके सामने खड़े थे?

सभी इस्राएली यहोवा अपने परमेश्वर के सामने खड़े थे।

व्यवस्थाविवरण 29:12

इस्राएली यहोवा अपने परमेश्वर के सामने क्यों खड़े थे?

वे यहोवा के सामने खड़े थे ताकि उस दिन वे यहोवा के साथ की जा रही वाचा और शपथ में सहभागी हो जाए।

व्यवस्थाविवरण 29:13

यहोवा इस वाचा के माध्यम से इस्राएल के लोगों के लिए क्या करना चाहते थे?

वह इस्राएल के लोगों को अपनी प्रजा बनाना चाहते थे।

व्यवस्थाविवरण 29:14–15

उस दिन मोआब में यहोवा जो वाचा और शपथ इस्राएल के साथ कर रहे थे, उसमें कौन-कौन लोग शामिल थे?

उस दिन मोआब में खड़े हुए सब लोग और वे भी जो वहाँ उनके साथ नहीं थे, वे सब उस वाचा और शपथ में शामिल थे जो यहोवा इस्राएल के साथ कर रहे थे।

व्यवस्थाविवरण 29:16

इस्राएल के लोगों को फिर से किस विषय में स्मरण कराया जा रहा था?

उन्हें यह याद दिलाया जा रहा था कि वे मिस्र देश में कैसे रहते थे और मार्ग में की जातियों के बीचों बीच होकर कैसे निकले थे।

व्यवस्थाविवरण 29:17–18

लोगों को यह स्मरण क्यों दिलाया जा रहा था कि जब वे मिस्र से निकले थे तब उन्होंने घिनौनी वस्तुएँ देखी थीं?

उन्हें उन घिनौनी वस्तुएँ स्मरण दिलाई जा रही थी जो उन्होंने देखी थीं ताकि उनमें से कोई भी ऐसा न हो जिसका मन यहोवा से फिर जाए, और उन जातियों के देवताओं की उपासना करें, और ताकि उनके मध्य ऐसी कोई जड़ हो, जिससे विष या कड़वा फल निकले।

व्यवस्थाविवरण 29:19

जो मनुष्य श्राप के शब्द सुनता है उसे अपने मन में क्या नहीं सोचना चाहिए?

जो मनुष्य श्राप के शब्द सुनता है, उसे यह नहीं कहना चाहिए कि उसका कुशल होगा, चाहे वह अपने मन के हठ पर चलता हो।

व्यवस्थाविवरण 29:20

उस मनुष्य के साथ क्या होगा जो कहता है कि उसका कुशल होगा, चाहे ही वह अपने मन के हठ पर चलता हो?

यहोवा उसका पाप क्षमा नहीं करेंगे, यहोवा के कोप और जलन का धुआँ उसको छा लेगा, और जितने श्राप इस पुस्तक में लिखे हैं वे सब उस पर आ पड़ेंगे, और यहोवा उसका नाम धरती पर से मिटा देगा।

व्यवस्थाविवरण 29:22

आने वाली पीढ़ी क्या पूछेगी जब वे इस देश पर विपत्तियों और यहोवा के फैलाए हुए रोग को देखेंगे?

वे पूछेंगे कि यहोवा ने इस देश से ऐसा क्यों किया? और इस बड़े कोप के भड़कने का क्या कारण है।

व्यवस्थाविवरण 29:24

आने वाली पीढ़ी क्या पूछेगी जब वे इस देश पर विपत्तियों और यहोवा द्वारा इस देश को दिए गए रोगों को देखेंगे?

वे पूछेंगे कि यहोवा ने इस देश से ऐसा क्यों किया और इस बड़े कोप के भड़कने का क्या कारण है।

व्यवस्थाविवरण 29:25–26

जब आने वाली पीढ़ी पूछेगी कि यहोवा ने इस देश के साथ ऐसा क्यों किया, तो लोग क्या उत्तर देंगे?

लोग कहेंगे कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने यहोवा की वाचा को तोड़ा है और उन्होंने पराए देवताओं की उपासना की है और उनके आगे झुकने लगे, जिन्हें वे पहले नहीं जानते थे, और यहोवा ने उनको नहीं दिया था।

व्यवस्थाविवरण 29:27

लोग क्या कहेंगे कि इस देश के विरुद्ध क्या भड़क उठा?

लोग कहेंगे कि यहोवा का कोप इस देश के विरुद्ध भड़क उठा।

व्यवस्थाविवरण 29:28

लोग क्या कहेंगे कि यहोवा उन लोगों के साथ क्या करेगा जिन्हें उसने कोप आकर उनके देश से उखाड़ दिया है?

लोग कहेंगे कि यहोवा ने अपने कोप, जलजलाहट और बड़ा ही क्रोध करके उन्हें उनके देश में से उखाड़कर दूसरे देश में फेंक दिया।

व्यवस्थाविवरण 29:29

गुप्त बातें किसके वश है?

गुप्त बातें यहोवा के ही वश में रहती हैं।

व्यवस्थाविवरण 29:29

जो बातें प्रगट की गई हैं, वे किसकी होती हैं?

जो बातें प्रकट की गई हैं, वे हमेशा इस्राएल के लोगों और उनके वंशजों के लिए हैं इसलिए कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी की जाएँ।

व्यवस्थाविवरण 30:2–3

इस्राएल के लोगों को क्या करना चाहिए ताकि यहोवा उनको बँधुआई से लौटा ले आए, उन पर दया करें और उन्हें सब देशों के लोगों में से इकट्ठा करें जहाँ यहोवा ने उन्हें तितर-बितर कर दिया था?

उन्हें अपने सारे मन और सारे प्राण से अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरकर उसके पास लौट आना चाहिए और उनकी आज्ञा मानना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 30:4

यहोवा इस्राएल के निर्वासित लोग को कहाँ से इकट्ठा करेंगे?

यहोवा धरती के छोर से इस्राएल के निर्वासित लोगों को इकट्ठा करेंगे।

व्यवस्थाविवरण 30:5

यहोवा निर्वासित इस्राएलियों को किस स्थान पर पहुँचाएंगे?

यहोवा उन्हें उस देश में पहुँचाएंगे जिसके अधिकारी उनके पुरखा थे।

व्यवस्थाविवरण 30:6

यहोवा इस्राएलियों और उनके वंश के मन का खतना क्यों करेंगे?

यहोवा उनके मन का खतना करेंगे ताकि वे अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम करें, जिससे वे जीवित रह सकें।

व्यवस्थाविवरण 30:7

इस्राएल के लोगों पर जो श्राप की बातें थी, उन्हें यहोवा किस पर भेजेंगे?

यहोवा इस्राएल के लोगों के शत्रुओं और उन पर जो उनसे बैर करते हैं और उनके पीछे पड़े हैं, उन पर श्राप की बातें भेजेंगे।

व्यवस्थाविवरण 30:8

जब इस्राएल के लोग यहोवा के पास लौटेंगे, तो क्या होगा?

वे यहोवा को सुनेंगे और मूसा ने जो भी आज्ञाएँ उन्हें दी हैं, वे सब मानेंगे।

व्यवस्थाविवरण 30:9

जब यहोवा इस्राएल के लोगों को उनके हाथों के सभी कामों में, उनके सन्तान में, उनके पशुओं के बच्चों में और उनकी भूमि की उपज में बढ़ती करेंगे, तब यहोवा क्या करेंगे?

यहोवा इस्राएल के लोगों पर वैसे ही आनन्द करेंगे जैसे उन्होंने उनके पूर्वजों के ऊपर किया था।

व्यवस्थाविवरण 30:10

इस्राएल के लोगों को क्या करना चाहिए ताकि यहोवा उन पर प्रसन्न हों?

इस्राएल के लोग यहोवा की सुनकर उसकी आज्ञाओं और विधियों को जो इस व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हैं माना करें, और अपने परमेश्वर यहोवा की ओर अपने सारे मन और सारे प्राण से मन फिराएं।

व्यवस्थाविवरण 30:11

मूसा ऐसा क्या कहते हैं जो लोगों के लिए न तो कठिन है और न ही उनकी पहुँच से दूर है?

मूसा कहते हैं कि जो आज्ञा वह इस्राएल के लोगों को दे रहे हैं, वह न तो उनके लिए कठिन है और न ही उनकी पहुँच से दूर है।

व्यवस्थाविवरण 30:14

वचन कहाँ पर स्थित है?

वचन आपके बहुत निकट है, आपके मुँह और मन ही में है, ताकि आप इस पर चले।

व्यवस्थाविवरण 30:15

मूसा ने इस्राएल के लोगों के सामने क्या दिखाया है?

मूसा ने इस्राएल के लोगों के सामने जीवन और मरण, हानि और लाभ दिखाया है।

व्यवस्थाविवरण 30:16

यदि इस्राएल के लोग अपने परमेश्वर यहोवा के उन आज्ञाओं को माने जो मूसा ने उन्हें दिए थे, तो क्या होगा?

वे जीवित रहेंगे और बढ़ते जाएंगे, और यहोवा उन्हें उस देश में आशीष देंगे जहाँ वे अधिकारी होने जा रहे हैं।

व्यवस्थाविवरण 30:17–18

लोगों का क्या होगा यदि उनका मन भटक जाए और वे न सुनें, बल्कि उनका मन भटककर पराए देवताओं को दण्डवत् करे और वे उनकी उपासना करने लगे?

वे निःसन्देह नष्ट हो जाएंगे और उस देश में बहुत दिनों के लिए नहीं रह पाएंगे।

व्यवस्थाविवरण 30:19

मूसा आकाश और पृथ्वी को साक्षी मानकर इस्राएल के लोगों से क्या चुनने के लिए कह रहे हैं?

मूसा लोगों से जीवन ही को अपना लेने कह रहे हैं ताकि वे और उनके वंश दोनों जीवित रह सकें।

व्यवस्थाविवरण 30:20

लोगों को जीवन का चुनाव क्यों करना चाहिए?

उन्हें अपने जीवन को इस प्रकार चुनना चाहिए कि वे अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करें, उनकी बात माने और उनसे लिपटे रहें क्योंकि वही उनका जीवन और दीर्घ आयु देते हैं।

व्यवस्थाविवरण 31:1–2

मूसा ने सब इस्राएलियों को अपनी बढ़ती उम्र के बारे में क्या कहा?

उन्होंने उन्हें बताया कि अब वे एक सौ बीस वर्ष के हो गए हैं और अब वे चल फिर नहीं सकते हैं।

व्यवस्थाविवरण 31:2–3

यहोवा ने मूसा से यरदन पार करने के विषय में क्या कहा?

उन्होंने मूसा से कहा कि वह यरदन पार नहीं जाएंगे, लेकिन परमेश्वर मूसा से पहले यरदन पार जाएंगे और इस्राएल के सामने से उन जातियों का नष्ट करेंगे।

व्यवस्थाविवरण 31:3

यहोवा ने कहा कि मूसा के आगे-आगे यरदन को कौन पार करेगा?

यहोवा ने मूसा से कहा कि यहोशू इस्राएलियों के आगे-आगे यरदन के पार जाएंगे।

व्यवस्थाविवरण 31:4

यहोवा ने एमोरियों के राजा सीहोन और ओग के साथ क्या किया?

यहोवा ने उन्हें और उनके देश को नष्ट कर दिया।

व्यवस्थाविवरण 31:5

यहोवा कहते हैं कि जब इस्राएल जातियों से लड़ेंगे, तो वह उनके लिए क्या करेंगे?

यहोवा कहते हैं कि जब इस्राएल उनका सामना लड़ाई में करेंगे, तो वह उनको इस्राएल से हरवा देंगे।

व्यवस्थाविवरण 31:6

मूसा इस्राएलियों को क्या निर्देश देते हैं?

मूसा उनसे कहते हैं कि वे हियाव बाँध और दृढ़ हो, उनसे न डर और न भयभीत हो क्योंकि यहोवा उनके संग चलेंगे और वह उनको धोखा नहीं देंगे और नही छोड़ेंगे।

व्यवस्थाविवरण 31:7

मूसा ने यहोशू से सब इस्राएलियों के सम्मुख क्या कहा?

मूसा ने यहोशू से कहा कि वे हियाव बाँध और दृढ़ हो जाएँ क्योंकि यहोशू इस्राएलियों के साथ उस देश में जाएंगे जिसे यहोवा ने उनके पूर्वजों को देने की शपथ ली थी और यहोवा उन्हें उस देश का अधिकारी बनाएंगे।

व्यवस्थाविवरण 31:8

मूसा ने यहोशू से कहा कि यहोवा उनके लिए क्या करेगा?

मूसा ने यहोशू से कहा कि यहोवा उनके आगे-आगे चलेंगे, उनके संग रहेंगे और यहोवा उनको धोखा नहीं देंगे और नही छोड़ेंगे, इसलिए उन्हें डरना या मन कच्चा नहीं होना देना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 31:9

मूसा ने व्यवस्था लिखकर इसे किसे सौंपा?

मूसा ने यह व्यवस्था लेवीय याजकों को दिया, जो वाचा का सन्दूक उठानेवाले थे, और उन्होंने इसकी प्रतियाँ इस्राएल के सब वृद्ध लोगों को सौंप दी।

व्यवस्थाविवरण 31:10–11

मूसा ने याजकों को मूसा द्वारा दी गई व्यवस्था को कितनी बार पढ़ने का आज्ञा दिया?

मूसा ने याजकों को आज्ञा दिया कि वे हर सात-सात वर्ष के बीतने पर, झोपड़ीवाले पर्व के दौरान, सब इस्राएलियों के सामने व्यवस्था को पढ़ें।

व्यवस्थाविवरण 31:12–13

मूसा ने याजकों से पुरुष, स्त्री, बालक और फाटकों के भीतर के परदेशी को इकट्ठा करने के लिए क्यों कहा?

मूसा ने याजकों से कहा कि वे सब लोगों को इकट्ठा करें ताकि वे सुन सकें और सीख सकें, और अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानकर तथा व्यवस्था के सारे वचनों के पालन कर सकें, ताकि उनके बच्चे भी सुन सकें और यहोवा का भय मानते रहें।

व्यवस्थाविवरण 31:13

इस्राएल के लोगों को कितने समय तक याजकों द्वारा व्यवस्था पढ़ाया जाना चाहिए?

जब तक वे उस देश में जीवित रहेंगे, जिसे वे यरदन पार करके प्राप्त करने जा रहे हैं, तब तक याजकों को लोगों को व्यवस्था पढ़ना चाहिए।

व्यवस्थाविवरण 31:14

यहोवा ने मूसा से यहोशू को बुलाने और मिलापवाले तम्बू में उपस्थित होने के लिए क्यों कहा?

यहोवा ने मूसा से कहा कि वे यहोशू को मिलापवाले तम्बू में बुलाएं क्योंकि वह दिन आ रहा था जब मूसा के मरने का दिन निकट है।

व्यवस्थाविवरण 31:14–15

जब मूसा और यहोशू मिलापवाले तम्बू में उपस्थित हुए, तब क्या हुआ?

जब मूसा और यहोशू मिलापवाले तम्बू में उपस्थित हुए, तब यहोवा उस तम्बू के द्वार पर बादल के खम्भे में होकर दर्शन दिया।

व्यवस्थाविवरण 31:16

यहोवा ने मूसा से कैसे कहा कि लोग उनके पुरखाओं के संग सो जाने पर कैसे व्यवहार करेंगे?

यहोवा ने मूसा से कहा कि लोग उठकर, उस देश के पराए देवताओं के पीछे जिनके मध्य वे जाकर रहेंगे व्यभिचारी हो जाएँगे, और यहोवा को त्याग कर उस वाचा को जो उन्होंने उनसे बाँधी है तोड़ेंगे।

व्यवस्थाविवरण 31:17

यहोवा ने मूसा से क्या कहा कि वह क्या करेंगे जब लोग यहोवा की वाचा को त्याग देंगे?

यहोवा ने मूसा से कहा कि जिस दिन लोग उनकी वाचा को त्याग देंगे, उस दिन उनका कोप उन पर भड़केगा, वे उन्हें त्याग देंगे, और वे अपना मुँह छिपा लेंगे।

व्यवस्थाविवरण 31:17–18

यहोवा ने मूसा से क्या कहा कि जब यहोवा अपना मुँह छिपा लेंगे तो लोगों के साथ क्या होगा?

यहोवा ने मूसा से कहा कि बहुत सी विपत्तियाँ और क्लेश लोगों पर आएँगी और वह उनसे अपना मुँह छिपा लेंगे क्योंकि वे पराए देवताओं की ओर फिर जाएँगे।

व्यवस्थाविवरण 31:19

यहोवा ने मूसा से यह गीत लिखने और इसे इस्राएल के लोगों को सिखाने और उनके कंठस्थ करने के लिए क्यों कहा?

यहोवा ने मूसा से कहा कि वे एक गीत लिखें और इसे लोगों को सिखाएं ताकि यह गीत इस्राएल के लोगों के विरुद्ध यहोवा के लिए एक साक्षी ठहरे।

व्यवस्थाविवरण 31:20

यहोवा ने मूसा से क्या कहा कि जब लोग उस देश में होंगे जिसे देने की शपथ यहोवा ने उनके पूर्वजों से खाई थी तो उन्हें क्या करना होगा?

यहोवा ने मूसा से कहा कि इस्राएल के लोग पराए देवताओं की ओर फिरेंगे, उनकी उपासना करेंगे, यहोवा को तिरस्कार करके उनकी वाचा को तोड़ देंगे।

व्यवस्थाविवरण 31:21

यहोवा ने मूसा से क्या कहा कि जब इस्राएल के लोगों पर बहुत सी विपत्तियाँ और क्लेश आएँगी, तो यह गीत क्या करेगा?

यहोवा ने मूसा से कहा कि यह गीत इस्राएल के सामने एक साक्षी के रूप में गवाही देगा और यह उनके सन्तान कभी भी नहीं भूलेगी।

व्यवस्थाविवरण 31:21(#2)

यहोवा ने कहा कि उन्हें लोगों के बारे में क्या मालूम है, इससे पहले कि वे उन्हें उस देश में लाए जिसके विषय उन्होंने शपथ खाई है?

यहोवा ने कहा कि उन्हें उन कल्पनाओं के बारे में मालूम था जो लोग अभी बना रहे थे।

व्यवस्थाविवरण 31:22

मूसा ने यहोवा द्वारा लिखाए जाने वाले गीत को लिखने से पहले कितनी देर प्रतीक्षा की?

मूसा ने उसी दिन गीत लिखा जिस दिन यहोवा ने उन्हें लिखाने के लिए कहा और फिर उसी दिन उन्होंने इसे इस्राएल के लोगों को सिखाया।

व्यवस्थाविवरण 31:23

यहोवा ने नून के पुत्र यहोशू को क्या आज्ञा दिया?

यहोवा ने यहोशू को हियाव बाँधने और दृढ़ होने का आज्ञा दिया।

व्यवस्थाविवरण 31:23 (#2)

यहोवा ने यहोशू को हियाव बाँधने और दृढ़ होने का आज्ञा क्यों दिया?

यहोवा ने यहोशू से कहा कि वे हियाव बाँधै और दृढ़ बनें क्योंकि यहोशू इस्राएल के लोगों को उस देश में ले जाएंगे जिसकी यहोवा ने उन्हें शपथ खाई थी। यहोवा ने यह भी कहा कि वे यहोशू के संग रहेंगे।

व्यवस्थाविवरण 31:24–25

मूसा ने व्यवस्था के वचन को पुस्तक में लिखने के बाद उसे किसे दिया?

मूसा ने यहोवा का सन्दूक उठानेवाले लेवियों को दिए।

व्यवस्थाविवरण 31:25–26

जब मूसा व्यवस्था की पुस्तक लिख चुका, तो उन्होंने लेवियों से क्या कहा कि उन्हें उसके साथ क्या करना चाहिए?

मूसा ने लेवियों से कहा कि वे व्यवस्था की पुस्तक लें और इसे अपने परमेश्वर यहोवा की वाचा के सन्दूक के पास रखें ताकि यह वहाँ तुझ पर साक्षी देती रहे।

व्यवस्थाविवरण 31:27

मूसा ने लेवियों से क्या कहा कि वह उनके बारे में आज भी मालूम है, जब वह जीवित थे?

मूसा ने लेवियों से कहा कि उन्हें उनके बलवा के बारे में पता था और कैसे वे यहोवा के खिलाफ बलवा करते आए हैं।

व्यवस्थाविवरण 31:28

मूसा लेवियों से अपनी गोत्रों के सब वृद्ध लोगों को और सरदारों को अपने सामने इकट्ठा करने के लिए क्यों कहते हैं?

मूसा लेवियों से कहते हैं कि अपनी गोत्रों के सब वृद्ध लोगों को और सरदारों को इकट्ठा करें ताकि वे उनको ये वचन सुना सकें और आकाश और पृथ्वी को उनके विरुद्ध साक्षी के रूप में बुला सकें।

व्यवस्थाविवरण 31:29

मूसा क्या कहता है कि उन्हें मालूम है कि उनकी मृत्यु के पश्चात क्या होगा?

मूसा कहते हैं कि उनकी मृत्यु के बाद लोग बिल्कुल बिगड़ जाएंगे और उस मार्ग को छोड़ दोगे जिस पर उन्हें चलने की आज्ञा दी गई।

व्यवस्थाविवरण 31:29 (#2)

मूसा कहते हैं कि जब लोग उस मार्ग को छोड़ दोगे जिसकी मूसा ने उन्हें आज्ञा दिया था, तो क्या होगा?

मूसा कहते हैं कि अन्त के दिनों में जब वे स मार्ग को छोड़ दोगे जिसकी मूसा ने उन्हें आज्ञा दिया था, तब विपत्ति उन पर आ पड़ेगी।

व्यवस्थाविवरण 31:29 (#3)

मूसा क्यों कहते हैं कि विपत्ति लोगों पर आ पड़ेगी?

मूसा कहते हैं कि विपत्ति लोगों पर आ पड़ेगी क्योंकि वे यहोवा की दृष्टि में जो बुरा है, वह काम करेंगे, जिससे वे अपनी बनाई हुई वस्तुओं की पूजा करके उन्हें रिस दिलाओगे।

व्यवस्थाविवरण 31:30

मूसा ने इस्राएल की सारी सभा के समक्ष क्या गीत के वचन सुनाए?

मूसा ने उस गीत के वचन सारी सभा के समक्ष गाए जो उन्होंने लिखा था।

व्यवस्थाविवरण 32:1

मूसा आकाश और पृथ्वी को क्या करने के लिए बुला रहे हैं?

मूसा आकाश से कान लगाने की प्रार्थना कर रहे हैं और परमेश्वर से बोलने की अनुमति देने की विनती कर रहे हैं, और वह पृथ्वी से उनके मुँह की बातें सुनने की प्रार्थना कर रहे हैं।

व्यवस्थाविवरण 32:2

मूसा अपनी उपदेश और अपने बातों की तुलना किससे करते हैं?

मूसा अपनी उपदेश की तुलना मेंह से करते हैं और अपने बातों की तुलना ओस से करते हैं।

व्यवस्थाविवरण 32:3

मूसा किसके नाम का प्रचार करते हैं और किसकी महिमा को मानने को कहते हैं?

मूसा यहोवा के नाम का प्रचार करते हैं और परमेश्वर की महिमा को मानने को कहते हैं।

व्यवस्थाविवरण 32:4

किसका काम खरा हैं और किसके गति न्याय की है?

वह (सच्चा परमेश्वर) चट्टान है और उनका काम खरा हैं और उनके गति न्याय की है।

व्यवस्थाविवरण 32:4 (#2)

कौन कुटिलता से मुक्त हैं, कौन न्याय और सीधा हैं?

वह सच्चा परमेश्वर है, उनमें कुटिलता नहीं, वह धर्मी और सीधा है।

व्यवस्थाविवरण 32:5–6

मूसा उन लोगों से क्या कहते हैं जिन्होंने यहोवा के विरुद्ध बुरे काम किया है?

मूसा उन्हें एक टेढ़े और तिरछे जाति, मूर्ख और निर्बुद्धि लोग कहते हैं।

व्यवस्थाविवरण 32:6

मूसा के अनुसार इस्राएल के लोगों को किसने बनाया और स्थिर किया?

मूसा कहते हैं कि यहोवा ने इस्राएल के लोगों को बनाया और स्थिर किया।

व्यवस्थाविवरण 32:7

मूसा कहते हैं कि बाप और वृद्ध इस्राएलियों को किन बातों की स्मरण दिला सकते हैं?

मूसा कहते हैं कि बाप और वृद्ध इस्राएलियों को प्राचीनकाल के दिनों को और पीढ़ी-पीढ़ी के वर्षों के बारे में स्मरण दिला सकेंगे।

व्यवस्थाविवरण 32:8

मूसा बताते हैं कि बाप और वृद्ध लोग क्या कह सकते हैं कब परमप्रधान ने एक-एक जाति को निज-निज भाग बाँट दिया?

मूसा ने कहा कि परमप्रधान ने आदमियों को अलग-अलग बसाया और लोगों की सीमाएँ इस्राएलियों की गिनती के अनुसार ठहराई।

व्यवस्थाविवरण 32:9

यहोवा का अंश क्या है और उनका नपा हुआ निज भाग कौन है?

यहोवा का अंश उनकी प्रजा है और याकूब उनका नपा हुआ निज भाग है।

व्यवस्थाविवरण 32:10

यहोवा ने याकूब (अपने प्रजा) को कहाँ पर पाया?

यहोवा ने याकूब (उनके प्रजा) को एक मरुभूमि में पाया।

व्यवस्थाविवरण 32:10 (#2)

यहोवा ने अपने प्रजा के लिए क्या-क्या किया?

यहोवा उनके चारों ओर रहकर उनकी रक्षा की और अपनी आँख की पुतली के समान उनकी सुधि रखी।

व्यवस्थाविवरण 32:11

मूसा यहोवा द्वारा अपने लोगों की देखभाल की तुलना किससे करते हैं?

मूसा यहोवा के अपने लोगों की देखभाल करने के तरीके की तुलना उस उकाब से करते हैं जो अपने घोंसले को हिला-हिलाकर अपने बच्चों के ऊपर-ऊपर मण्डराता है।

व्यवस्थाविवरण 32:12

केवल किसने इस्राएल के लोगों का अगुआई किया?

केवल यहोवा ने इस्राएल के लोगों का अगुआई किया।

व्यवस्थाविवरण 32:15-16

जब यशूरून (इस्राएल) मोटा हो गया तो क्या हुआ?

जब यशूरून (इस्राएल) मोटा और हष्ट-पुष्ट हो गया, तो उन्होंने यहोवा को तज दिया और तुच्छ जाना। उन्होंने अपने पराए देवताओं से उनमें जलन उपजाई और घृणित कर्म करके उनको रिस दिलाई।

व्यवस्थाविवरण 32:17-18

जब परमेश्वर के लोग बलवा करते रहे, तो वे किसे भूल गए?

वे उस चट्टान (परमेश्वर) को भूल गए जिन्होंने उन्हें उत्पन्न किया।

व्यवस्थाविवरण 32:19-20

यहोवा ने क्या किया जब उसके लोगों ने उन्हें रिस दिलाई?

यहोवा ने अपने लोगों से अपना मुख छिपा क्योंकि उन्होंने उन्हें रिस दिलाई।

व्यवस्थाविवरण 32:21

यहोवा इस्राएल के मन में जलन और रिस उत्पन्न करने के लिए किसका उपयोग करेंगे?

यहोवा उन्हें उन लोगों से जलन उत्पन्न कराएँगे जो यहोवा के प्रजा नहीं हैं, और उन्हें एक ऐसे जाति से रिस दिलाएँगे जो मूर्ख है।

व्यवस्थाविवरण 32:23

यहोवा ने कहा कि वह इस्राएल पर कैसे विपत्ति भेजेंगे?

यहोवा ने कहा कि वे उन पर विपत्ति पर विपत्ति भेजेंगे।

व्यवस्थाविवरण 32:27

यहोवा ने अपने लोगों को जो चेतावनी दी थी, उसे करने से उन्हें क्या रोकेगा??

यहोवा ने अपने लोगों को जो चेतावनी दी थी, वह सब करने से वह दूर रहेंगे, क्योंकि उनके द्रोही उलटा समझने लेंगे और कहेंगे, "हम अपने ही बाहुबल से प्रबल हुए।"

व्यवस्थाविवरण 32:28

इस्राएल को एक जाति के रूप में किस चीज की आवश्यकता थी?

इस्राएल में युक्ति की कमी थी और उनमें समझ नहीं थी।

व्यवस्थाविवरण 32:29

मूसा इस्राएल से क्या विचार करना चाहते हैं?

मूसा चाहते हैं कि इस्राएल अपने अन्त पर विचार करें।

व्यवस्थाविवरण 32:30-31

इस्राएल अपने शत्रुओं को कैसे पराजित कर सकता है और कैसे उन पर विजय प्राप्त कर सकता है?

इस्राएल विजय प्राप्त कर सकता है क्योंकि यहोवा ने उन्हें विजय प्रदान की है और उनके शत्रुओं की चट्टान इस्राएलियों की चट्टान के समान नहीं है।

व्यवस्थाविवरण 32:33

सदोम और गमोरा के दाख से बने दाखमधु को कैसे वर्णित किया गया है?

दाखमधु को साँपों का विष और काले नागों का हलाहल कहा गया है।

व्यवस्थाविवरण 32:33-34

शत्रु की दाखलता कहाँ से आती है और दाखमधु का वर्णन कैसे किया गया है?

उनकी दाखलता सदोम और गमोरा से आती है, और उनके दाखमधु विषैले और हलाहल हैं।

व्यवस्थाविवरण 32:34

यहोवा की बात कैसे स्थिर रहती है?

यहोवा की बात उन्हीं के द्वारा बनाई जाती है और उनके भण्डारों में मुहरबन्द रखी जाती है।

व्यवस्थाविवरण 32:35

पलटा लेना और बदला देना किसके हाथ में होता है?

पलटा लेना और बदला देना यहोवा का काम है।

व्यवस्थाविवरण 32:35 (#2)

विपत्ति का दिन और जो दुःख उन पर पड़नेवाले हैं, वे कितनी शीघ्र हो सकती हैं?

विपत्ति का दिन निकट है और जो दुःख उन पर पड़नेवाले हैं, वे शीघ्र आ रहे हैं।

व्यवस्थाविवरण 32:36

कौन अपने लोगों के लिए न्याय करेंगे और अपने दासों पर तरस खाएंगे?

यहोवा अपने लोगों के लिए न्याय करेंगे और अपने दासों पर तरस खाएंगे।

व्यवस्थाविवरण 32:37–38

इस्राएल के लोगों के लिए सहायता और आड़ किससे नहीं आती है?

सहायता और आड़ देवताओं से नहीं आती, बल्कि उस चट्टान से आती है जिस पर उनका भरोसा था और जिसने उनके बलिदानों को ग्रहण किया और उनके तपावनों का दाखमधु अर्पणों को पिया।

व्यवस्थाविवरण 32:39

परमेश्वर कहते हैं कि उनके संग और कोई परमेश्वर नहीं है और परमेश्वर अकेले क्या कहते हैं कि वे क्या कर सकते हैं?

परमेश्वर कहते हैं कि उनके उनके संग और कोई परमेश्वर नहीं है और वही अकेले मार डालते हैं और जिलाते हैं, घायल करते हैं और चंगा भी करते हैं।

व्यवस्थाविवरण 32:40

परमेश्वर, जो अकेले परमेश्वर हैं,अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर क्या वादा करते हैं?

परमेश्वर अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर वादा करते हैं कि जैसे वे अनन्तकाल के लिये जीवित हैं, वैसे ही वे कार्य करेंगे।

व्यवस्थाविवरण 32:41

परमेश्वर किन पर न्याय करेंगे और बदला लेंगे?

परमेश्वर अपने द्रोहियों और और अपने बैरियों पर न्याय करेंगे और बदला लेंगे।

व्यवस्थाविवरण 32:42

परमेश्वर कहते हैं कि उनके तीर को किनके लहू से मतवाला करेंगे और उनकी तलवार किनके माँस को खाएगी?

परमेश्वर के तीर मारे हुओं और बन्दियों का लहू से मतवाला होंगे, और उनकी तलवार शत्रुओं के लम्बे बाल वाले प्रधानों के माँस को खाएगी।

व्यवस्थाविवरण 32:43

जब परमेश्वर अपने दासों के लहू का पलटा लेते हैं और अपने द्रोहियों को पर बदला लाते हैं, तब कौन उनके प्रजा के साथ आनन्द मनाएंगे?

अन्यजाति परमेश्वर की प्रजा के साथ आनन्द मनाएंगे।

व्यवस्थाविवरण 32:43 (#2)

परमेश्वर अपने देश के लिए प्रायश्चित किसके लिए करेंगे?

परमेश्वर अपने देश और अपनी प्रजा के पाप के लिये प्रायश्चित करेंगे।

व्यवस्थाविवरण 32:44

इस गीत के सब वचन को लोगों को किसने सुनाया?

मूसा और यहोशू ने यह गीत लोगों को सुनाया।

व्यवस्थाविवरण 32:46

इस्राएल के लोगों को मूसा द्वारा दी गई गवाही के बातों पर अपना-अपना मन लगाए क्यों करना चाहिए?

लोगों को मूसा द्वारा दी गई गवाही के बातों पर अपना-अपना मन लगाए ताकि वे इस व्यवस्था की सारी बातों के मानने में चौकसी करने की आज्ञा अपने बच्चों को दे सकें।

व्यवस्थाविवरण 32:48–49

यहोवा ने मूसा से यरीहो के सामने पहाड़ पर जाने के लिए क्यों कहा?

यहोवा ने मूसा से कहा कि वे पहाड़ पर जाएं ताकि वे उस कनान देश को देख सकें, जिसे यहोवा इस्राएलियों की निज भूमि के रूप में दे रहे थे।

व्यवस्थाविवरण 32:50

यहोवा कहते हैं कि पहाड़ पर मूसा के साथ क्या होगा?

यहोवा कहते हैं कि मूसा पहाड़ पर मरकर अपने लोगों में मिल जाएंगे जैसे हारून होर पहाड़ पर मरकर अपने लोगों में मिल गए थे।

व्यवस्थाविवरण 32:50–51

यहोवा ने क्यों कहा कि मूसा पहाड़ पर मर जाएंगे?

मूसा पहाड़ पर मरने वाले थे क्योंकि वह कादेश के मरीबा नाम सोते पर यहोवा के प्रति अपराध कर बैठे थे और इस्राएलियों के मध्य में यहोवा को पवित्र नहीं ठहराया।

व्यवस्थाविवरण 32:52

यहोवा ने कहा कि मूसा अपनी मृत्यु से पहले क्या देखेंगे?

यहोवा ने कहा कि मूसा वह देश को देखेंगे जो यहोवा इस्राएलियों को दे रहे हैं, लेकिन वह वहाँ नहीं जा पाएंगे।

व्यवस्थाविवरण 33:1

मूसा ने इस्राएल के लोगों को यह आशीर्वाद कब दिया?

मूसा ने अपनी मृत्यु से पहले इस्राएल के लोगों को यह आशीर्वाद दिया।

व्यवस्थाविवरण 33:2

मूसा यहोवा का वर्णन कैसे करते हैं?

मूसा यहोवा का वर्णन इस प्रकार करते हैं कि वे पारान पर्वत से अपना तेज दिखाए, और लाखों पवित्रों के मध्य में से आए, और उनके दाहिने हाथ से ज्वालामय विधियाँ निकलीं।

व्यवस्थाविवरण 33:3

यहोवा इस्राएल के लोगों के प्रति क्या भावना रखते हैं?

यहोवा इस्राएल के लोगों से प्रेम करते हैं।

व्यवस्थाविवरण 33:3 (#2)

इस्राएल के पवित्र लोग यहोवा के प्रेम का उत्तर कैसे देते हैं?

इस्राएल के पवित्र लोग यहोवा के पाँवों के पास बैठे रहते हैं और यहोवा के वचनों से लाभ उठाते हैं।

व्यवस्थाविवरण 33:4

मूसा ने लोगों को दिए गए व्यवस्था के बारे में क्या कहा?

मूसा ने व्यवस्था को याकूब की मण्डली का निज भाग ठहराया।

व्यवस्थाविवरण 33:5

जब लोगों के मुख्य-मुख्य पुरुष और इस्राएल के सभी गोत्रएक संग होकर एकत्रित हुए, तो यहोवा क्या ठहरा?

यहोवा यशूरून (इस्राएल) में राजा ठहरा।

व्यवस्थाविवरण 33:6

मूसा ने रूबेन के बारे में क्या कहा था?

मूसा ने कहा कि रूबेन जीवित रहेगा और मरेगा नहीं, लेकिन उसके मनुष्य थोड़े होंगे।

व्यवस्थाविवरण 33:7

मूसा यहूदा को कौन-सी आशीर्वाद देते हैं?

मूसा यहोवा से प्रार्थना करते हैं कि वह यहूदा की आवाज सुनकर उसे उसके लोगों के पास पहुँचाए और उसके लिए अपने हाथों से लड़कर उसे आशीर्वाद दे।

व्यवस्थाविवरण 33:8

मूसा ने लेवियों को आशीर्वाद देते हुए क्या करने को कहा?

मूसा लेवियों से यहोवा की व्यवस्था सिखाएँगे, पवित्र धूप और यहोवा की वेदी पर होमबलि चढ़ाने, यहोवा के सम्पत्ति पर आशीष देने और उनके हाथों की सेवा को ग्रहण करने के लिए कहते हैं, और विरोधियों और बैरियों की शक्ति को समाप्त करें जो यहोवा के खिलाफ उठ खड़े होते हैं।

व्यवस्थाविवरण 33:10–11

मूसा लेवियों को अपनी आशीष में क्या करने के लिए कहते हैं?

मूसा लेवियों को यहोवा की व्यवस्था, पवित्र धूप और यहोवा की वेदी पर होमबलि के बारे में सिखाने के लिए कहते हैं, ताकि वे यहोवा की सम्पत्ति पर आशीष दे और उनके हाथों की सेवा को ग्रहण करें, और विरोधियों और बैरियों को पराजित करें जो यहोवा के खिलाफ खड़े होते हैं।

व्यवस्थाविवरण 33:12

मूसा बिन्यामीन के लिए क्या आशीर्वाद देते हैं?

यहोवा कहते हैं कि बिन्यामीन यहोवा का प्रिय जन हैं। यहोवा उसे पूरे दिन भर उस पर छाया करेंगे और वह यहोवा के कंधों के बीच रहता है।

व्यवस्थाविवरण 33:16

अपने भाइयों से अलग कौन था?

यूसुफ अपने भाइयों से अलग थे।

व्यवस्थाविवरण 33:17

एप्रैम के लाखों-लाख और मनश्शे के हजारों-हजार क्या कर सकते हैं?

वे सब मनुष्यों को पृथ्वी के छोर तक ले ढकेलेंगे।

व्यवस्थाविवरण 33:18–19

मूसा ने कहा कि जबूलून और इस्साकार को आशीषें कहाँ से मिलेंगी?

जबूलून और इस्साकार की आशीषें पहाड़ों से, समुद्र का धन से औररेत में छिपे हुए अनमोल पदार्थ से लाभ उठाएँगे।

व्यवस्थाविवरण 33:20

मूसा ने कहा कि गाद का राज्य बढ़ने पर वह कैसे जीवित रहेगा?

गाद वहां एक सिंहनी के समान वास करेंगे और किसी के बाँह या सिर के चाँद तक को फाड़ डालेंगे।

व्यवस्थाविवरण 33:21

गाद ने यहोवा के लिए क्या किया?

गाद ने यहोवा के धर्म और उसके नियम का प्रतिपालन इस्राएल के साथ होकर पूरा किया।

व्यवस्थाविवरण 33:22

मूसा ने दान का वर्णन कैसे किया?

मूसा ने दान को बाशान से कूदनेवाला सिंह का बच्चा बताया।

व्यवस्थाविवरण 33:23

मूसा ने कहा कि नप्ताली कौन से देश का अधिकारी होगा?

नप्ताली पश्चिम और दक्षिण के देश का अधिकारी होगा।

व्यवस्थाविवरण 33:24–25

मूसा आशेर के लिए आशीर्वाद के बारे में क्या कहते हैं?

मूसा कहते हैं कि आशेर अपने भाइयों की तुलना में अधिक आशीष पाएगा, कि वह अपना पाँव तेल में डुबो सकता है और वह अपने सभी दिनों के लिए सुरक्षित रहेंगे।

व्यवस्थाविवरण 33:27

मूसा ने कहा कि परमेश्वर यशूरून (इस्राएल) के शत्रुओं के साथ क्या करेंगे?

मूसा ने कहा कि परमेश्वर यशूरून (इस्राएल) के शत्रुओं को उनके सामने से निकाल देंगे और परमेश्वर कहेंगे, "उनको सत्यानाश कर दे।"

व्यवस्थाविवरण 33:28

याकूब के वंशज कैसे जीवन व्यतीत करेंगे?

याकूब के वंश अन्न और नये दाखमधु के देश में निडर और संरक्षित रहेंगे।

व्यवस्थाविवरण 33:29

मूसा इस्राएल का वर्णन कैसे कर रहे हैं?

मूसा इस्राएल को धन्य और यहोवा द्वारा उद्धार पाई हुई प्रजा के रूप में वर्णित करते हैं, जिनके शत्रु उनको सराहेंगे।

व्यवस्थाविवरण 34:1–3

मूसा को वह स्थान कहाँ से दिखाया गया था जहाँ इस्राएल के सभी गोत्र अपने अधिकार में लेंगी?

मूसा को पिसगा की एक चोटी से वह सारी भूमि दिखाई गई जो इस्राएल के सभी गोत्र अपने अधिकार में लेंगी।

व्यवस्थाविवरण 34:4

यहोवा ने मूसा को उनके मृत्यु से पहले क्या देखने की अनुमति दी?

यहोवा ने मूसा को उस भूमि को देखने की अनुमति दी जिसे यहोवा ने अब्राहम, इसहाक और याकूब से शपथ खाकर वंश में देने का वचन दिया था।

व्यवस्थाविवरण 34:6

मूसा की मृत्यु कहाँ हुई और यहोवा ने मूसा को कहाँ मिट्टी दी?

मूसा मोआब के देश में मरे और यहोवा ने उन्हें मोआब के देश में बेतपोर के सामने एक तराई में मिट्टी दी।

व्यवस्थाविवरण 34:7

एक सौ बीस वर्ष की आयु में जब मूसा की मृत्यु हुई तो उनकी शारीरिक स्थिति क्या थी?

जब मूसा की मृत्यु हुई, तब भी उनका पौरूष घटा नहीं था और उनकी आँखें धुँधली नहीं हुई थी।

व्यवस्थाविवरण 34:8

इस्राएली मूसा के लिए कितने समय तक रोते रहे?

इस्राएली मूसा के लिए तीस दिन तक रोते रहे।

व्यवस्थाविवरण 34:9

इस्राएल के लोगों ने यहोशू की बात क्यों मानी और यहोवा ने मूसा को जो आज्ञा दिया था, उसे क्यों स्वीकार किया?

इस्राएल के लोगों ने यहोशू की बात सुनी क्योंकि यहोशू बुद्धिमानी की आत्मा से परिपूर्ण थे, और मूसा ने अपने हाथ उन पर रखे थे।

व्यवस्थाविवरण 34:10

यहोवा ने मूसा से कैसे बातें की?

यहोवा ने मूसा से आमने-सामने बातें की।

व्यवस्थाविवरण 34:10–12

क्या इस्राएल में कभी मूसा के समान कोई भविष्यद्वक्ता हुआ है?

पूरे इस्राएल में मूसा के समान कोई भी भविष्यद्वक्ता कभी नहीं हुआ।